नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

परिवहन विशेष

www.newsparivahan.com

वर्ष 03, अंक 378, नई दिल्ली, बुधवार 18 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

"शब्दों से नहीं,व्यवहार से पहचान बनती है। क्योंकि अच्छे शब्दकुछ समय के लिए याद रहते हैं, लेकिन अच्छा व्यवहारजीवन भर याद रहता है।

02 जिंक (Zinc) एक अत्यंत महत्वपूर्ण सूक्ष्म खनिज (Trace Mineral) है....

06 क्या यही कारण है कि कुछ परिवारों में सभी लड़के होते हैं?

08 धार्मिक परंपराओं का निर्वाह के साथ राजमहल मे होगा चैत्र पर्व :राजा- सरायकेला

RNI No. RNI No :- DELHIN/2023/86499
परिवहन विशेष
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र
India's First Leading English Transport Newspaper
parivahanvishesh

आरएनआई द्वारा दो भाषाओं में अनुमोदित, प्रकाशित समाचार पत्र "परिवहन विशेष" वार्षिक समारोह

दिनांक:- 29 मार्च , स्थान:- मावलंकर हाल, कांस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया, समय:- 1 बजे से 5 बजे

परिवहन विशेष : हिन्दी एवं इंग्लिश भाषा दैनिक समाचार पत्र आपको अपने तृतीय वार्षिक समारोह में सम्मान पूर्वक शामिल होने के लिए निमंत्रित करता है
इस वर्ष का वार्षिक समारोह मुख्य रुप से "सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा" को समर्पित है।

मुख्य विशेषता :

1. विशेषज्ञों द्वारा जानने का प्रयास की भारत सरकार द्वारा देश में सख्त कानून लागू करने के बाद भी बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं और सड़को पर उपलब्ध जाम का मुख्य कारण और उससे छुटकारा पाने के लिए क्या नीतियां अनिवार्य,
2. सुप्रीम कोर्ट आफ इंडिया, एनजीटी, वायु गुणवत्ता आयोग एवं सरकारों द्वारा नए नए दिशा निर्देशों, आदेशों के बाद भी प्रदूषण नियंत्रण होने के स्थान पर बढ़ता जा रहा है उससे निजात पाने के लिए जाएंगे इस समारोह में विशेषज्ञों से उनके विचार
3. डिजिटल इंडिया की तरफ बढ़ते भारत में बढ़ते साइबर क्राइम से कैसे बचा जा सकता है इसपर पूर्ण चर्चा एवम् विशेषज्ञों की राय
4. भारत दश में नए कानूनों के बावजूद महिलाओं पर अत्याचार और गुमशुदगी पर गहन चिंतन और विशेषज्ञों के विचार

इस समारोह में भारत देश के ज्वलंतशील मुद्दों पर जानकारी प्राप्त कर समाचार पत्रों द्वारा जनहित में जनता को सचेत करने और उससे जनता की सुरक्षा संभव के लिए *"परिवहन विशेष" " समर्पित एवं पूर्ण रुप से प्रयासरत रहेगा। इस उद्देश्य को मद्देनजर रखते हुए इस वर्ष का वार्षिक समारोह ज्वलंतशील मुद्दों को समर्पित किया गया है। इस समारोह में भारत देश से विशेषज्ञों के साथ - साथ हमारा प्रयास भारत सरकार के माननीय गणमान्य कैबिनेट एवं राज्य स्तरीय मंत्रियों की गरिमा पूर्ण उपस्थिति और उनके विचार जनहित में मुख्य बिंदुओं में रहेगा।

इस समारोह में भारत देश में जनहित में इन कार्यों को करने में पूर्ण निष्ठा से सलग्न "सामाजिक कार्यकर्ताओं और कार्यरत समूहों (एनजीओ, ट्रस्ट एवं एसोसिएशन) को पुरस्कार" देकर सम्मानित किया जाएगा।

आपकी उपस्थिति हमारा गर्व

TRANSPORT VISHESH NEWS LIMITED
www.newsparivahan.com, www.newstransport.in

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार

पिंकी कुंडू

Account status for 9918----40,

Your personal loan application status has been updated.

Check details here and next steps in your account.

उन संदेशों से सावधान रहें जो दावा करते हैं कि आपका लोन मंज़ूर हो गया है—even though आपने कभी आवेदन ही नहीं किया। यह एक क्लासिक सोशल इंजीनियरिंग घोटाला है। असली खतरा इस बात में है कि ठग कैसे भ्रम और जल्दबाज़ी का फायदा उठाते हैं:

क्यों है यह जोखिम भरा

– फ़िशिंग जालः ऐसे संदेशों में दिए गए लिंक पर क्लिक करना या नंबर पर कॉल करना आपकी व्यक्तिगत और वित्तीय जानकारी उजागर कर सकता है।

– पहचान की चोरीः धोखेबाज़ आपको अपनी पहचान "वेरिफ़ाई" करने के लिए बहका सकते हैं और फिर उसी का दुरुपयोग करके आपके नाम पर असली खाते खोल सकते हैं।

– मनोवैज्ञानिक दबावः "आसान पैसे" का लालच दिखाकर वे आर्थिक तनाव और मजबूरी का फायदा उठाते हैं, जिससे लोग तुरंत प्रतिक्रिया देने लगते हैं।

– मैलवेयर का खतराः लिंक या अटैचमेंट आपके डिवाइस में स्पायवेयर या रैनसमवेयर इंस्टॉल कर सकते हैं।

ठग कैसे बहकाते हैं

अस्थिर आर्थिक समय में लोग राहत के वादों के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। ठग इस कमजोरी को पहचानते हैं और ऐसे संदेश तैयार करते हैं जो आधिकारिक, तात्कालिक और आकर्षक लगते हैं। वे भरोसा दिलाने के लिए इस्तेमाल करते हैं:

• प्राधिकरण का संकेत ("XYZ बैंक ने आपका लोन मंजूर किया है")

– तात्कालिकता ("फंड पाने के लिए अभी कार्रवाई करें")

– व्यक्तिगतकरण (आपका नाम या आंशिक विवरण इस्तेमाल करके संदेश को असली दिखाना)

लोन अप्रूवल घोटालों के वास्तविक मामले

1. नकली लोन एजेंट और प्रोसेसिंग फ़ीस जाल

– पीड़ितों को SMS या WhatsApp संदेश मिलता है: "आपका ₹2 लाख का लोन मंज़ूर हो गया है—कोई दस्तावेज़ नहीं चाहिए।"

• ठग UPI या बैंक ट्रांसफ़र से प्रोसेसिंग फ़ीस मांगते हैं।

– पैसा भेजते ही ठग गायब हो जाते हैं।

– प्रभावः कोई लोन नहीं मिलता और पीड़ित तुरंत पैसा खो देते हैं। RBI ने FY 2024–25 में ₹36,014 करोड़ के बैंक फ्रॉड में ऐसे लोन घोटालों की बड़ी हिस्सेदारी दर्ज की।

2. नकली NBFC कॉल्स से पहचान की चोरी

– ठग प्रतिष्ठित NBFC के प्रतिनिधि बनकर कॉल करते हैं।

– वे पीड़ितों पर दबाव डालते हैं कि वे आधार, पैन या बैंक विवरण साझा करें।

– बाद में पीड़ितों को पता चलता है कि उनके नाम पर नए खाते या लोन खोले गए हैं।

– प्रभावः वित्तीय ज़िम्मेदारी और क्रेडिट हिस्ट्री को दीर्घकालिक नुकसान।

3. लोन ऐप घोटाले और उत्पीड़न

– पीड़ित अनलाइसेंस्ड लोन ऐप्स डाउनलोड करते हैं जो तुरंत अप्रूवल का वादा करते हैं।

– ऐप्स गुप्त रूप से कॉन्टैक्ट्स, फ़ोटो और दस्तावेज़ों तक पहुँच लेते हैं।

– जब पीड़ित बढ़े हुए शुल्क नहीं चुका पाते, तो ग़ैरक़ानूनी रिकवरी एजेंट उन्हें और उनके परिचितों को गाली-गलौज और धमकी भरे कॉल्स से परेशान करते हैं।

– प्रभावः मानसिक आघात, प्रतिष्ठा को नुकसान और वसूली के लिए दबाव।

सुरक्षा चेकलिस्ट

– संदिग्ध संदेशों को नज़रअंदाज़ करें और मिटा दें।

– लोन के लिए कभी भी पहले से फ़ीस न दें।

–सीधे बैंक/NBFC से आधिकारिक चैनल पर सत्यापित करें।

– घोटालों को साइबर क्राइम पोर्टल (www.cybercrime.gov.in) या टेलीकॉम प्रदाता को रिपोर्ट करें।

– सतर्क रहें: कोई भी असली ऋणदाता बिना आवेदन किए लोन मंजूर नहीं करता।

अगर आप भारत देश में निम्नलिखित कार्यों में जनहित को समर्पित है तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं 'परिवहन विशेष' समाचार पत्र के तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह में सम्मान

"सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा"
आज ही अपना आवेदन प्रक्रिया पूरी करे, यह बिल्कुल निशुल्क है,
अगर आपकी प्रतिभा इसे प्राप्त करने में सक्षम है तो आवेदन करे
https://www.newsparivahan.com/chief-editor/https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGy2Cw9
मुख्य संपादक (परिवहन विशेष)

तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह - 2026

परिवहन विशेष
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

सड़क सुरक्षा, प्रदूषण, साइबर अपराध और महिला सुरक्षा
के जनहित कार्यों को समर्पित

सड़क सुरक्षा
महिला सुरक्षा
प्रदूषण
साइबर अपराध

अगर आप इन क्षेत्रों में जनहित को समर्पित हैं और आपकी प्रतिभा सक्षम है,
तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं सम्मान। आज ही बिल्कुल निशुलक आवेदन करें।

दिनांक: 29 मार्च (रविवार) समय - दोपहर 1 बजे 5 बजे तक।
स्थान - कंस्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली, 110001

आवेदन प्रक्रिया
https://forms.gle/6tTqg7JX4EHGY2Cw9

मुख्य संपादक - परिवहन विशेष

जिंक (Zinc) एक अत्यंत महत्वपूर्ण सूक्ष्म खनिज (Trace Mineral) है, जो मानव शरीर के अनेक आवश्यक कार्यों के लिए अनिवार्य है

यह प्रतिरक्षा प्रणाली (Immune System) को मजबूत बनाने, घावों को जल्दी भरने, हार्मोन के निर्माण, डीएनए संश्लेषण, प्रजनन स्वास्थ्य, स्वाद और गंध की क्षमता, तथा शरीर की सही वृद्धि और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

पर्याप्त मात्रा में जिंक का सेवन करने से शरीर की संक्रमणों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, त्वचा का स्वास्थ्य बेहतर रहता है, और कुछ सूजनजनित (Inflammatory) तथा चयापचय संबंधी (Metabolic) रोगों से भी संरक्षण मिल सकता है।

नीचे विभिन्न श्रेणियों में जिंक से भरपूर खाद्य पदार्थों की एक विस्तृत सूची प्रस्तुत है।

जिंक से भरपूर बीज (Seeds)

बीज पौधों पर आधारित आहार में जिंक के सबसे अच्छे स्रोतों में से एक माने जाते हैं।

* कद्दू के बीज
* तिल
* भांग के बीज (Hemp Seeds)
* सूरजमुखी के बीज
* अलसी के बीज
* तरबूज के बीज
* चिया सीड्स

विशेष रूप से कद्दू के बीज और तिल जिंक के अत्यंत समृद्ध स्रोत हैं और शाकाहारी आहार में अक्सर सुझाए जाते हैं।

जिंक युक्त मेवे (Nuts)

* काजू
* बादाम
* पाइन नट्स (चिलगोज़ा)
* मूंगफली
* अखरोट
* पिस्ता

हालाँकि मेवों में जिंक की मात्रा मध्यम होती है, फिर भी काजू और पाइन नट्स अपेक्षाकृत बेहतर स्रोत माने जाते हैं।

साबुत अनाज (Whole Grains)

* ओट्स
* क्विनोआ
* ब्राउन राइस
* साबुत गेहूँ
* जौ
* बाजरा, ज्वार, रागी जैसे मिलेट्स

साबुत अनाज जिंक के साथ-साथ आहार फाइबर और महत्वपूर्ण बी-विटामिन भी प्रदान करते हैं।

दालें और फलियाँ (Legumes and Pulses)

* चना
* मसूर, मूंग, तूर दाल
* राजमा
* ब्लैक बीन्स
* सोयाबीन
* मटर

दालें और फलियाँ जिंक के साथ-साथ प्रोटीन के भी उत्कृष्ट शाकाहारी स्रोत हैं।

जिंक युक्त सब्जियाँ (Vegetables)

यद्यपि सब्जियों में जिंक की मात्रा अपेक्षाकृत कम होती है, फिर भी कुछ सब्जियाँ उपयोगी मात्रा प्रदान करती हैं।

* मशरूम
* पालक
* ब्रोकली
* एस्पेरेगस
* हरे मटर
* स्वीट कॉर्न
* चुकंदर
* आलू

जिंक युक्त फल (Fruits)

फलों में जिंक की मात्रा कम होती है, लेकिन वे आहार में सहायक योगदान देते हैं।

* एवोकाडो
* अनार
* केला
* ब्लैकबेरी
* रास्पबेरी
* अमरूद
* खुबानी
* खजूर
* अंजीर

पशु-आधारित स्रोत (Animal Sources – अत्यंत समृद्ध)

यदि आहार में मांसाहारी पदार्थ शामिल हों, तो निम्नलिखित जिंक के बहुत समृद्ध स्रोत हैं:

* ऑयस्टर (जिंक का सबसे समृद्ध प्राकृतिक स्रोत)
* रेड मीट
* चिकन
* अंडे
* मछली (विशेष रूप से सार्डिन और सैल्मन)

दुग्ध उत्पाद:

* दूध
* पनीर
* दही

प्रतिदिन जिंक की अनुमानित आवश्यकता

* वयस्क पुरुष: लगभग 11 mg प्रतिदिन
* वयस्क महिलाएँ: लगभग 8 mg प्रतिदिन
* गर्भवती महिलाएँ: लगभग 11–12 mg प्रतिदिन

महत्वपूर्ण पोषण संबंधी तथ्य

वनस्पति स्रोतों से मिलने वाले जिंक का अवशोषण (Absorption) अनाज और दालों में मौजूद फाइटेट्स (Phytates) के कारण कुछ कम हो सकता है।

लेकिन पारंपरिक भारतीय खाद्य विधियाँ जैसे:

* भिगोना (Soaking)
* अंकुरित करना (Sprouting)
* किण्वन (Fermentation)

इनसे जिंक का अवशोषण काफी बेहतर हो जाता है।

व्यावहारिक शाकाहारी जिंक-समृद्ध संयोजन

कद्दू के बीज + चना + साबुत गेहूँ + पालक + बादाम

यह संयोजन प्रतिरक्षा शक्ति, हार्मोन संतुलन और समग्र चयापचय स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में सहायक हो सकता है।

लंबे समय तक रहने वाले या बार-बार होने वाले श्वसन संक्रमणों (respiratory infections) के कुछ मामलों में जिंक की सलाह

लंबे समय तक रहने वाले या बार-बार होने वाले श्वसन संक्रमणों (respiratory infections) के कुछ मामलों में अनेक चिकित्सक जिंक सप्लीमेंट देने की सलाह देते हैं, क्योंकि जिंक प्रतिरक्षा प्रणाली (immune system) को मजबूत करने और श्वसन तंत्र की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आम तौर पर उपयोग किए जाने वाले सप्लीमेंट्स में Zinc sulfate प्रमुख है, जबकि अन्य रूप जैसे Zinc gluconate और Zinc acetate भी चिकित्सकीय रूप से प्रयुक्त होते हैं।

श्वसन स्वास्थ्य के लिए जिंक क्यों महत्वपूर्ण है

1. प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाता है

जिंक शरीर की प्रतिरक्षा कोशिकाओं के सही कार्य के लिए आवश्यक है, जैसे:

T-लिम्फोसाइट्स (T-lymphocytes)

नेचुरल किलर कोशिकाएँ (Natural killer cells)

मैक्रोफेज (Macrophages)

पर्याप्त जिंक स्तर शरीर को वायरस और बैक्टीरिया की पहचान कर उन्हें नष्ट करने में अधिक सक्षम बनाता है, जिससे संक्रमण की तीव्रता और अवधि कम हो सकती है।

2. श्वसन उपकला (Respiratory Epithelium) की रक्षा करता है

श्वसन मार्ग के भीतर एक सुरक्षात्मक कोशिकीय परत होती है जिसे respiratory epithelium कहा जाता है।

जिंक इस परत को:

मजबूत बनाए रखने में सहायता करता है

फेफड़ों में प्रवेश करने वाले रोगजनकों (pathogens) से शरीर की रक्षा को बेहतर बनाता है

यह प्रभाव विशेष रूप से Bronchitis और Pneumonia जैसे बार-बार होने वाले संक्रमणों में महत्वपूर्ण माना जाता है।

3. एंटी-वायरल प्रभाव

वैज्ञानिक अनुसंधानों से संकेत मिलता है कि जिंक कुछ श्वसन वायरसों की वायरल प्रतिकृति (viral replication) को प्रभावित कर सकता है।

अध्ययनों में यह भी पाया गया है कि जिंक सप्लीमेंट लेने से:

Common cold की अवधि कम हो सकती है

खाँसी, गले में खराश और नाक बंद होने जैसे लक्षणों की तीव्रता कम हो सकती है

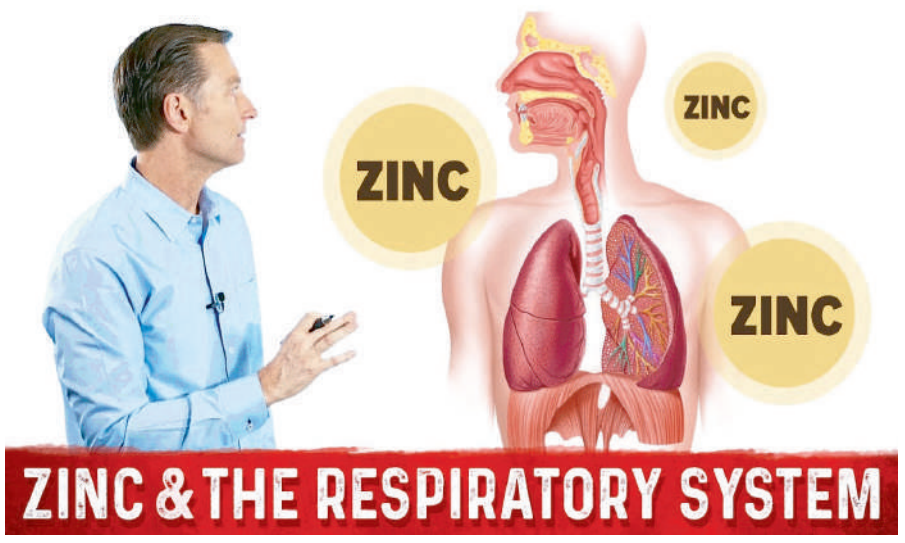

4. सूजन को कम करने में सहायक

जिंक में सूजन-रोधी (anti-inflammatory) गुण होते हैं, जो प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को संतुलित रखने में मदद करते हैं।

इससे:

श्वसन संक्रमणों में अत्यधिक सूजन को रोका जा सकता है

फेफड़ों के ऊतकों को क्षति से बचाने में सहायता मिलती है

5. जिंक की कमी को दूर करने में सहायक

कई क्षेत्रों में, विशेषकर जहाँ भोजन मुख्यतः पौधों पर आधारित होता है, हल्की जिंक की कमी देखी जाती है।

जिंक की कमी से:

बार-बार श्वसन संक्रमण हो सकते हैं

बीमारी से उबरने में अधिक समय लग सकता है

प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया कमजोर हो सकती है

ऐसी स्थिति में जिंक सप्लीमेंट लेने से सामान्य प्रतिरक्षा कार्य बहाल करने में मदद मिलती है।

महत्वपूर्ण चिकित्सकीय सावधानी

जिंक सप्लीमेंट बिना चिकित्सकीय सलाह के अधिक मात्रा में नहीं लेने चाहिए।

अत्यधिक मात्रा लेने से निम्न समस्याएँ हो सकती हैं:

मतली (nausea)

पेट में जलन या असहजता

शरीर में कॉपर (copper) के अवशोषण में बाधा

इसलिए चिकित्सक आमतौर पर जिंक सीमित अवधि और उचित मात्रा में ही लेने की सलाह देते हैं।

✓ निष्कर्ष

जिंक शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली और श्वसन स्वास्थ्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व है। इसी कारण चिकित्सक कभी-कभी लंबे समय तक रहने वाले या बार-बार होने वाले श्वसन संक्रमणों में जिंक सप्लीमेंट देने की सलाह देते हैं। पर्याप्त जिंक स्तर प्रतिरक्षा को मजबूत करने, श्वसन मार्ग की सुरक्षा करने और कुछ वायरल संक्रमणों की अवधि कम करने में सहायक हो सकता है।

जिंक से संबंधित महत्वपूर्ण और उपयोगी जानकारियाँ

कुछ सदस्य समय-समय पर जिंक सप्लीमेंट्स के बारे में प्रश्न पूछते रहते थे। इसी कारण आज जिंक से संबंधित महत्वपूर्ण और उपयोगी जानकारियाँ साझा की गई हैं, ताकि सभी सदस्य इस विषय को बेहतर ढंग से समझ सकें।

जिंक हमारे शरीर के लिए एक आवश्यक सूक्ष्म खनिज (trace mineral) है, जो प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने, संक्रमण से लड़ने, घाव भरने, हार्मोन निर्माण और शरीर की अनेक जैविक प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उचित मात्रा में जिंक का सेवन स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हो सकता है, विशेषकर तब जब शरीर में इसकी कमी हो।

किन्तु यह भी ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है कि जिंक सप्लीमेंट्स का सेवन बिना चिकित्सकीय परामर्श के नहीं करना चाहिए। आवश्यकता से अधिक मात्रा में जिंक लेने से कुछ दुष्प्रभाव हो सकते हैं, जैसे:

मतली या उल्टी

पेट में जलन या असहजता

शरीर में अन्य खनिजों, विशेषकर कॉपर (Copper) के अवशोषण में बाधा

इसीलिए, यदि किसी व्यक्ति को जिंक सप्लीमेंट लेने की आवश्यकता हो, तो उचित मात्रा और अवधि का निर्धारण केवल चिकित्सक की सलाह से ही किया जाना चाहिए।

अतः सभी सदस्यों से विनम्र अनुरोध है कि स्वास्थ्य संबंधी किसी भी सप्लीमेंट का सेवन स्वयं निर्णय लेकर न करें, बल्कि पहले योग्य चिकित्सक से परामर्श अवश्य लें। जागरूकता और सही जानकारी ही बेहतर स्वास्थ्य की कुंजी है।

काले चने (Black Chana) भारतीय पारंपरिक आहार

काले चने (Black Chana) को भारतीय पारंपरिक आहार में एक अत्यंत पौष्टिक और संतुलित खाद्य पदार्थ माना जाता है। इसमें प्रोटीन, आयरन, जिंक, फाइबर, विटामिन और कई महत्वपूर्ण खनिज तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, जो शरीर के समग्र स्वास्थ्य को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

काले चने का पोषण महत्व

वैज्ञानिक पोषण विश्लेषण के अनुसार लगभग 100 ग्राम काले चने में निम्नलिखित प्रमुख पोषक तत्व पाए जाते हैं:

प्रोटीन – लगभग 19–22 ग्राम

आयरन – लगभग 4–6 मिलीग्राम

जिंक – लगभग 2–3 मिलीग्राम

फाइबर – लगभग 10–17 ग्राम

कैल्शियम – लगभग 45–105 मिलीग्राम

मैग्नीशियम – लगभग 160 मिलीग्राम

पोटैशियम – लगभग 700–875 मिलीग्राम

फॉस्फोरस – लगभग 300–360 मिलीग्राम

इन पोषक तत्वों के कारण काले चने को उच्च गुणवत्ता वाला पौध-आधारित प्रोटीन और खनिजों का उत्कृष्ट स्रोत माना जाता है।

काले चने में मौजूद प्रमुख पोषक तत्वों के लाभ

1. प्रोटीन – शरीर की संरचना और ऊर्जा के लिए

काले चने में प्रचुर मात्रा में प्लांट-बेस्ड प्रोटीन पाया जाता है।

प्रोटीन के प्रमुख लाभ:

मांसपेशियों के निर्माण और मरम्मत में सहायक

शरीर की कोशिकाओं और ऊतकों के विकास में मदद

रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाना

इसी कारण शाकाहारी आहार में काले चने को प्रोटीन का उत्कृष्ट विकल्प माना जाता है।

2. आयरन – खून की कमी से बचाव

काले चने में पर्याप्त मात्रा में आयरन होता है, जो:

हीमोग्लोबिन बनाने में सहायक

शरीर में ऑक्सीजन के परिवहन को बेहतर बनाता है

एनीमिया (खून की कमी) के जोखिम को कम करता है

विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि आयरन के बेहतर अवशोषण के लिए काले चने के साथ नींबू या विटामिन-C युक्त खाद्य पदार्थ लेना लाभदायक होता है।

3. जिंक – प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए महत्वपूर्ण

काले चने में मौजूद जिंक शरीर की कई महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं में योगदान देता है:

रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाना

घाव भरने की प्रक्रिया को तेज करना

त्वचा और बालों के स्वास्थ्य को बनाए रखना

हार्मोन और एंजाइम के निर्माण में सहायता

4. फाइबर – पाचन तंत्र के लिए लाभकारी

काले चने में डाइटरी फाइबर अधिक मात्रा में होता है, जो:

पाचन को बेहतर बनाता है

कब्ज की समस्या को कम करता है

रक्त में शर्करा के स्तर को नियंत्रित रखने में मदद करता है

हृदय रोग के जोखिम को कम करने में सहायक हो सकता है

नवीन वैज्ञानिक दृष्टिकोण और हाल के स्वास्थ्य अवलोकन

हाल के पोषण अनुसंधानों के अनुसार दालें और बीन्स (जैसे काले चने) को नियमित आहार में शामिल करने से कई स्वास्थ्य लाभ देखे गए हैं:

हृदय रोग का जोखिम कम हो सकता है

टाइप-2 मधुमेह नियंत्रण में मदद मिल सकती है

पाचन तंत्र और आंतों के माइक्रोबायोम को लाभ मिलता है

शरीर को लंबे समय तक ऊर्जा और संतुष्टि मिलती है

इसी कारण आधुनिक पोषण विशेषज्ञ भी दालों और चनों के नियमित सेवन की सलाह देते हैं।

✓ निष्कर्ष:

काले चने एक अत्यंत पौष्टिक और संतुलित खाद्य पदार्थ हैं। इनमें मौजूद प्रोटीन, आयरन, जिंक, फाइबर और अन्य खनिज तत्व शरीर की शक्ति, रक्त निर्माण, रोग प्रतिरोधक क्षमता और पाचन स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी हैं। यदि इन्हें संतुलित आहार का हिस्सा बनाया जाए, तो यह समग्र स्वास्थ्य और दीर्घकालिक रोगों की रोकथाम में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

LAD (Left Anterior Descending) आर्टरी क्या है और इसे "विडो-मेकर" क्यों कहा जाता है?

LAD (लेफ्ट एंटीरियर डिसेंडिंग आर्टरी) हृदय की सबसे महत्वपूर्ण कोरोनरी धमनियों में से एक है। यह लेफ्ट मेन कोरोनरी आर्टरी से निकलने वाली दो प्रमुख शाखाओं में से एक होती है और हृदय के अग्र भाग (फ्रंट वॉल) तथा बाएँ निचले वेंट्रिकल को रक्त और ऑक्सीजन की आपूर्ति करती है। अनुमानतः यह धमनी हृदय की लगभग 45–50% मांसपेशियों को जीवनदायी रक्त पहुँचाती है।

इसे "विडो-मेकर" (Widowmaker) क्यों कहा जाता है?

LAD को "विडो-मेकर" इसलिए कहा जाता है क्योंकि यदि इसमें 70% से 100% तक अचानक पूर्ण या लगभग पूर्ण रुकावट हो जाए, तो यह अत्यंत घातक और जानलेवा हृदयाघात का कारण बनती है।

ऐसे हार्ट अटैक को ही आम भाषा में Widowmaker Heart Attack कहा जाता है।

इस स्थिति में:

हृदय का एक बहुत बड़ा हिस्सा अचानक ऑक्सीजन से वंचित हो जाता है

कुछ ही मिनटों में हृदय की मांसपेशियों में तेज़ी से क्षति (टिश्यू डेथ) होने लगती है

घातक अरिदमिया और अचानक कार्डियक अरेस्ट का खतरा अत्यधिक बढ़ जाता है

यदि तत्काल उपचार—जैसे एंजियोप्लास्टी या स्टेंट डालना—न किया जाए, तो रोगी की जान कुछ ही मिनटों में जा सकती है।

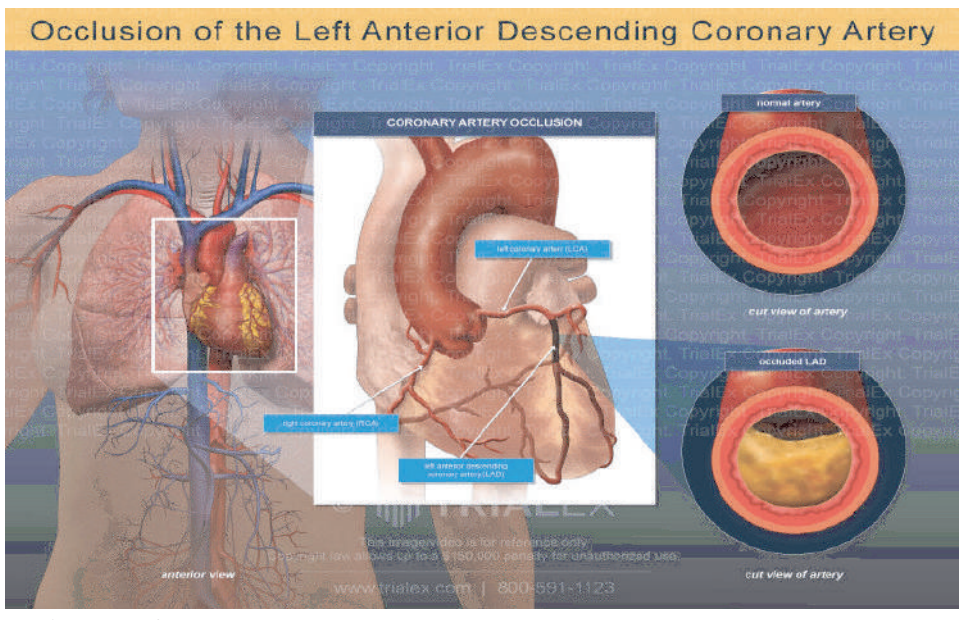

"विडो-मेकर" नाम की उत्पत्ति

इस शब्द की उत्पत्ति इसके अत्यधिक मृत्यु-दर (High Fatality Rate) से हुई है, विशेषकर पुरुषों में।

अतीत में LAD ब्लॉकेज से होने वाली अचानक मृत्यु इतनी आम थी कि माना जाता था कि इससे पत्नी विधवा हो जाती है—इसी कारण इसे नाटकीय रूप से "विडो-मेकर" कहा जाने लगा।

क्या यह केवल पुरुषों में होता है?

नहीं।

हालाँकि यह स्थिति मध्यम आयु के पुरुषों में अधिक देखी जाती है, परंतु महिलाएँ भी इससे प्रभावित होती हैं। महिलाओं में इसके लक्षण कई बार असामान्य होते हैं, जिससे पहचान में देरी हो सकती है।

आधुनिक चिकित्सा और आशा की किरण

अच्छी खबर यह है कि आज:

फास्ट एम्बुलेंस सेवाएँ

24×7 कैथ लैब्स

एडवांस स्टेंट और एंजियोप्लास्टी तकनीक

के कारण यदि मरीज को समय पर अस्पताल पहुँचाया जाए, तो जीवन बचने की संभावना पहले की तुलना में कहीं अधिक हो गई है।

LAD आर्टरी हृदय की जीवनरेखा है। इसका अचानक अवरोध एक मौन लेकिन घातक आपात स्थिति पैदा करता है।

इसलिए छाती में दर्द, पसीना, घबराहट, सांस फूलना या अचानक कमजोरी जैसे लक्षणों को कभी नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए।

समय पर पहचान और त्वरित उपचार ही "विडो-मेकर" को जीवन-दाता में बदल सकता है।

19 मार्च को उत्तराभाद्रपद नक्षत्र और शुक्ल योग में शुरू होगी चैत्र नवरात्रि

इस साल चैत्र नवरात्रि व नव संवत्सर 19 मार्च से शुरू होगा। वहीं नवरात्रि का समापन 27 मार्च को होगा। नवरात्रि के नौ दिनों में मां दुर्गा की पूजा-उपासना बड़ी ही श्रद्धा के साथ की जाती है।

इस साल चैत्र नवरात्रि व नव संवत्सर 19 मार्च से शुरू होगा। वहीं नवरात्रि का समापन 27 मार्च को होगा। नवरात्रि के नौ दिनों में मां दुर्गा की पूजा-उपासना बड़ी ही श्रद्धा के साथ की जाती है। पाल बालाजी ज्योतिष संस्थान जयपुर जोधपुर के निदेशक ज्योतिषाचार्य डॉ. अनीष व्यास ने बताया कि हिंदू पंचांग के अनुसार चैत्र मास की शुक्ल पक्ष प्रतिपदा तिथि 19 मार्च को सुबह 6:52 मिनट पर शुरू होगी और तिथि का समापन 20 मार्च की सुबह 4:52 मिनट पर होगा। इसलिए इस वर्ष चैत्र नवरात्रि की शुरुआत 19 मार्च को घटस्थापना के साथ होगी। इस दिन गुड़ी पड़वा के साथ हिंदू नववर्ष मनाया जाएगा। वहीं नवरात्रि का समापन 27 मार्च को होगा। चैत्र नवरात्रि प्रतिपदा तिथि से ही नया हिंदू वर्ष प्रारंभ हो जाता है। इस बार नवरात्रि पूरे नौ दिनों के होंगे और रामनवमी 26 मार्च को मनाई जाएगी।

ज्योतिषाचार्य डॉ. अनीष व्यास ने बताया कि चैत्र नवरात्रि के नौ दिनों में मां दुर्गा के अलग-अलग स्वरूपों की पूजा की जाती है। पहले दिन मां शैलपुत्री, दूसरे दिन मां ब्रह्मचारिणी, तीसरे दिन मां चंद्रघंटा, चौथे दिन मां कूष्मांडा, पांचवें दिन मां स्कंदमाता, छठे दिन मां कात्यायनी, सातवें दिन मां कालरात्रि, आठवें दिन मां महागौरी और नौवें दिन मां सिद्धिदात्री की पूजा की जाती है। प्रत्येक स्वरूप का अपना विशेष महत्व है और भक्त इनकी पूजा करके अलग-अलग प्रकार के आशीर्वाद की कामना करते हैं। नवरात्रि के अष्टमी और नवमी के दिन कन्या पूजन का विशेष महत्व होता है। इस दिन छोटी कन्याओं को देवी का स्वरूप मानकर उनका पूजन किया जाता है और उन्हें भोजन तथा उपहार दिए जाते हैं। मान्यता है कि ऐसा करने से मां दुर्गा प्रसन्न होती हैं और भक्तों की मनोकामनाएं पूरी करती हैं।

घट् स्थापना का मुहूर्त

ज्योतिषाचार्य डॉ. अनीष व्यास ने बताया कि बसंत नवरात्रा का आरंभ चैत्र शुक्ल में उदय व्यापिनी प्रतिपदा को होता है। लेकिन यदि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा किसी भी दिन उदय व्यापिनी नहीं हो (अर्थात्प्रतिपदा तिथि क्षय हो) तो पहले दिन (अमावस्या वाले दिन ही) नवरात्रा प्रारंभ करने के शास्त्रों में निर्देश मिलते हैं।

"तत्रीवयिकी प्रतिपद् ग्राह्या। दिनद्विये उदयव्याप्ती अव्याप्ती वा पूर्वा।।" (धर्मसिंधु)।

ज्योतिषाचार्य डॉ. अनीष व्यास ने बताया कि इस वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का क्षय है, अर्थात प्रतिपदा 19 मार्च, 2026 गुरुवार को सूर्योदय बाद शुरु होकर इसी दिन गुरुवार को ही (अग्रिम दिन शुक्रवार के सूर्योदय के पहले) समाप्त हो रही है, जिससे वह दोनों दिन (19 व 20 मार्च को) उदय व्यापिनी नहीं बनी है। बसन्त नवरात्र का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल में उदयव्यापिनी प्रतिपदा में द्विस्वभावलग्र युक्त प्रातः काल में होता है। इस वर्ष चैत्रशुक्ल प्रतिपदा, 19 मार्च 2026 (गुरुवार) को प्रातः 06:54 से अंतरात्रि 04:52 तक है। शास्त्रानुसार बसन्तनवरात्र का प्रारम्भ व घटस्थापना इसी दिन होगी।

द्विस्वभाव मीनलग्न प्रातः 06:54 से प्रातः 07:50 तक

मिथुनलग्न प्रातः 11:24 से दोपहर 01:38 तक

शुभ चौघड़िया प्रातः 06:54 से प्रातः 08:05,

चर-लाभ-अमृत का चौघड़िया प्रातः वकः 84 से दोपहर 03:32 तक

अभिजित मुहूर्त दोपहर 12:11 से 12:59 तक रहेगा।

तिथि

भविष्यवक्ता एवं कुंडली विश्लेषक डॉ अनीष व्यास ने बताया कि हिंदू पंचांग के अनुसार चैत्र मास की शुक्ल पक्ष प्रतिपदा तिथि 19 मार्च को सुबह 6:52 मिनट पर शुरू होगी और तिथि का समापन 20 मार्च की सुबह 4:52 मिनट पर होगा। इसलिए इस वर्ष चैत्र नवरात्रि की शुरुआत 19 मार्च को घटस्थापना के साथ होगी। उदया तिथि के अनुसार इस साल चैत्र नवरात्रि 19 मार्च से शुरू होगी और इसका समापन 27 मार्च को होगा। चैत्र नवरात्रि प्रतिपदा तिथि से ही नया हिंदू वर्ष प्रारंभ हो जाता है।

नक्षत्र एवं शुभ योग

भविष्यवक्ता एवं कुंडली विश्लेषक डॉ अनीष व्यास ने बताया कि नवरात्रि के पहले दिन उत्तराभाद्रपद नक्षत्र, शुक्ल योग का संयोग भी रहेगा। नवरात्रि के पहले दिन कलश स्थापना और घटस्थापना की जाती है।

विक्रम संवत 2083

भविष्यवक्ता एवं कुंडली विश्लेषक डॉ अनीष व्यास ने बताया कि हिंदू परंपरा में नव संवत्सर को नए आरंभ, नई ऊर्जा और नए संकल्प का प्रतीक माना जाता है। हर साल की तरह इस बार भी नया संवत्सर अपने साथ नई संभावनाएं और कुछ चुनौतियां लेकर आएगा। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार विक्रम संवत 2083 का नाम 'रौद्र' संवत्सर है, जिसका प्रभाव साल भर देखने को मिलेगा। इस साल चैत्र नवरात्र कुछ खास ज्योतिषीय संयोग में शुरू होंगे। प्रतिपदा तिथि अमावस्या में मिलने के कारण पहली तिथि टूटने का योग बन रहा है, लेकिन इसके बावजूद नवरात्र पूरे नौ दिनों के ही रहेंगे। प्रतिपदा तिथि 19 को सूर्योदय के बाद प्रारंभ होगी और अगले दिन 20 मार्च को सूर्योदय से पहले ही समाप्त हो जाएगी। शास्त्रों के अनुसार जिस दिन प्रतिपदा तिथि होती है, उसी दिन नवरात्र घटस्थापना करना श्रेष्ठ माना गया है।

पालकी पर सवार होकर आएंगी मां दुर्गा

कुंडली विश्लेषक डॉ अनीष व्यास ने बताया कि हर बार नवरात्र में देवी अलग-अलग वाहन पर आती हैं, और उस वाहन के हिसाब से अगले छह महीने की स्थिति का अनुमान लगाया जाता है। इस बार मां दुर्गा पालकी पर सवार होकर आएंगी। देवी भागवत में पालकी में माता के आगमन का फल रढोलायां मरणं ध्रुवम्र बताया गया है जो जन हानि रक्तपात होना बताता है। अर्थात पालकी (डोली) पर माता का आगमन शुभता का संकेत नहीं है। माता का डोली पर आगमन सामाजिक-राजनीतिक उथल-पुथल व महामारी का परिचायक माना गया है।

चैत्र नवरात्रि की तिथियां

19 मार्च - नवरात्रि प्रतिपदा- मां शैलपुत्री पूजा और घटस्थापना

20 मार्च - नवरात्रि द्वितीया- मां ब्रह्मचारिणी पूजा

21 मार्च - नवरात्रि तृतीया- मां चंद्रघंटा पूजा

22 मार्च - नवरात्रि चतुर्थी- मां कुष्मांडा पूजा

23 मार्च - नवरात्रि पंचमी- मां स्कंदमाता पूजा

24 मार्च - नवरात्रि षष्ठी- मां कात्यायनी पूजा

25 मार्च - नवरात्रि सप्तमी- मां कालरात्रि पूजा

26 मार्च - नवरात्रि अष्टमी- मां महागौरी, रामनवमी

27 मार्च - नवरात्रि नवमी- मां सिद्धिदात्री, नवरात्रि पारण

कलश स्थापना की सामग्री

भविष्यवक्ता डॉ अनीष व्यास ने बताया कि मां दुर्गा को लाल रंग खास पसंद है इसलिए लाल रंग का ही आसन खरीदें। इसके अलावा कलश स्थापना के लिए मिट्टी का पात्र, जौ, मिट्टी, जल से भरा हुआ कलश, मौली, इलायची, लौंग, कपूर, रोली, साबुत सुपारी, साबुत चावल, सिक्के, अशोक या आम के पांच पत्ते, नारियल, चुनरी, सिंदूर, फल-फूल, फूलों की माला और श्रृंगार पिटारी भी चाहिए।

कलश स्थापना

भविष्यवक्ता एवं कुंडली विश्लेषक डॉ अनीष व्यास ने बताया कि नवरात्रि के पहले दिन यानी कि प्रतिपदा को सुबह स्नान कर लें। मंदिर की साफ-सफाई करने के बाद सबसे पहले गणेश जी का नाम लें और फिर मां दुर्गा के नाम से अखंड ज्योत जलाएं। कलश स्थापना के लिए मिट्टी के पात्र में मिट्टी डालकर उसमें जौ के बीज बोएं। अब एक तांबे के लोटे पर रोली से स्वास्तिक बनाएं। लोटे के ऊपरी हिस्से में मौली बांधें। अब इस लोटे में पानी भरकर उसमें कुछ बूंदें गंगाजल की मिलाएं। फिर उसमें सवा रुपया, दूब, सुपारी, इत्र और अक्षत डालें। इसके बाद कलश में अशोक या आम के पांच पत्ते लगाएं। अब एक नारियल को लाल कपड़े से लपेटकर उसे मौली से बांध दें। फिर नारियल को कलश के ऊपर रख दें। अब इस कलश को मिट्टी के उस पात्र के ठीक बीचों बीच रख दें जिसमें आपने जौ बोएं हैं। कलश स्थापना के साथ ही नवरात्रि के नौ व्रतों को रखने का संकल्प लिया जाता है। आप चाहें तो कलश स्थापना के साथ ही माता के नाम की अखंड ज्योति भी जला सकते हैं।

क्या आप भी किनारे तक पहुंचने से पहले ही थक जाते हैं तो मार्क रुदरफोर्ड के संघर्ष से सीखें कभी न हारने की कला

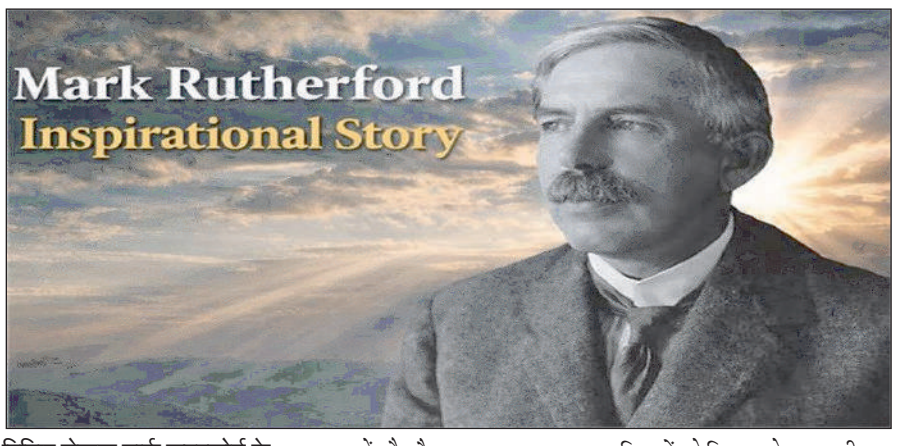

ब्रिटिश लेखक मार्क रुदरफोर्ड के बचपन का प्रसंग है। एक दिन वह समुद्र के किनारे बैठे थे। दूर सागर में एक जहाज लंगर डाले खड़ा था। वह जहाज तक तैर कर जाने के लिए मचल उठे। मार्क तैरना तो जानते ही थे, कूद पड़े समुद्र में और तैर कर जहाज तक पहुंच गए।

: ब्रिटिश लेखक मार्क रुदरफोर्ड के बचपन का प्रसंग है। एक दिन वह समुद्र के किनारे बैठे थे। दूर सागर में एक जहाज लंगर डाले खड़ा था। वह जहाज तक तैर कर जाने के लिए मचल उठे। मार्क तैरना तो जानते ही थे, कूद पड़े समुद्र में और तैर कर जहाज तक पहुंच गए। मार्क ने जहाज के कई चक्कर लगाए। मन खुशी से झूम उठा। विजय की खुशी और सफलता से आत्मविश्वास बढ़ा। लेकिन जैसे ही उन्होंने वापस लौटने को किनारे की तरफ देखा तो निराशा हावी होने लगी, किनारा बहुत दूर लगा।

सफलता के बाद भी निराशा बढ़ रही थी, अपने ऊपर अविश्वास हो रहा था। जैसे-जैसे मार्क के मन में ऐसे विचार आते रहे उनका शरीर वैसा ही शिथिल होने लगा। फुर्तीले नौजवान होने के बावजूद बिना डूबे ही डूबता सा महसूस करने लगे। लेकिन जैसे ही उन्होंने अपने विचारों को निराशा से आशा की तरफ मोड़ा, क्षण भर में ही चमत्कार सा होने लगा। वह अपने अंदर परिवर्तन अनुभव करने लगे।

वह तैरते हुए सोच रहे थे कि किनारे तक नहीं पहुंचने का मतलब है मर जाना और किनारे तक पहुंचने का प्रयास है डूब कर मरने से पहले का संघर्ष। इस सोच से जैसे उन्हें संजीवनी मिल गई। उन्होंने सोचा कि जब डूबना ही है तो सफलता के लिए संघर्ष क्यों न करें। भय का स्थान विश्वास ने ले लिया। इसी संकल्प के साथ वह तैरते हुए किनारे तक पहुंचने में सफल हुए। इस घटना ने उन्हें आगे भी काफी प्रेरित किया।

मासिक शिवरात्रि की यह चमत्कारी कथा बदल सकती है आपकी किस्मत, मिलेगा योग्य जीवनसाथी

पंचांग के अनुसार 17 मार्च को मासिक शिवरात्रि का व्रत रखा जाएगा। इस दिन पूजा-पाठ के साथ-साथ कथा पढ़ना भी बेहद शुभ माना जाता है। इसे पढ़ें बिना ये व्रत अधूरा माना जाता है।

शास्त्रों की बात, जानें धर्म के साथ

Masik Shivratri Vrat Katha : पंचांग के अनुसार 17 मार्च को मासिक शिवरात्रि का व्रत रखा जाएगा। इस दिन पूजा-पाठ के साथ-साथ कथा पढ़ना भी बेहद शुभ माना जाता है। इसे पढ़ें बिना ये व्रत अधूरा माना जाता है।

Masik Shivratri vrat ki Katha मासिक शिवरात्रि व्रत कथा

मासिक शिवरात्रि के महत्व को बताने वाली कई कथाएं प्रचलित हैं। इनमें दो कथाएं विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं एक शिकारी चित्रभानु की और दूसरी एक ब्राह्मण दंपति की। इन दोनों कथाओं में यह संदेश मिलता है कि सच्चे भाव से की गई भक्ति, चाहे वह अनजाने में ही क्यों न हो और जरूरतमंदों की सेवा करने से भगवान शिव प्रसन्न होते हैं और भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं।

चित्रभानु शिकारी की कथा

कथा के अनुसार, प्राचीन समय में चित्रभानु नाम का एक शिकारी था जो जंगल में जानवरों का शिकार करके अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। उस पर एक साहूकार का काफी कर्ज भी था। एक बार शिवरात्रि के दिन साहूकार ने कर्ज न चुका पाने के कारण उसे अपने पास बंदी बना लिया। वहीं चित्रभानु ने लोगों को शिवरात्रि की पूजा और कथा करते हुए सुना।

अगले दिन उसे छोड़ दिया गया, जिसके बाद वह शिकार की तलाश में जंगल गया, लेकिन पूरे दिन उसे कोई शिकार नहीं मिला। रात होने पर वह एक बेल के पेड़ पर चढ़कर बैठ गया। उस पेड़ के नीचे एक शिवलिंग स्थापित था। रात भर जब वह अपने धनुष को संभालता रहा, तो पेड़ से बेलपत्र टूटकर नीचे शिवलिंग पर गिरते रहे। उसी दौरान कई हिरण उसके सामने आए, लेकिन उसने उन्हें नहीं मारा। इस तरह अनजाने में ही उससे शिवरात्रि का व्रत और शिव पूजा पूरी हो गई। इस पुण्य के प्रभाव से उसका मन बदल गया और उसका हृदय करुणा से भर गया। उसने हिंसा का मार्ग छोड़ दिया और भगवान शिव की भक्ति में लग गया।

ब्राह्मण दंपति की कथा

एक अन्य कथा में बताया जाता है कि एक ब्राह्मण और उसकी पत्नी हर महीने श्रद्धा के साथ मासिक शिवरात्रि का व्रत रखते थे। एक बार उन्होंने पूरी निष्ठा से यह व्रत किया और भगवान शिव से आशीर्वाद की कामना की। व्रत पूर्ण करने के बाद उन्होंने राह चलते कुछ लोगों को दान-दक्षिणा दी। उसी दिन उनके घर एक निर्धन ब्राह्मण आया। दंपति ने उसे सम्मानपूर्वक भोजन कराया और उसकी सहायता की। उनकी इस सेवा भावना और सच्ची भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें आशीर्वाद दिया और उनके जीवन की सभी इच्छाएं पूर्ण कर दीं।

इन कथाओं से यह सीख मिलती है कि श्रद्धा, दया और सेवा भाव के साथ किया गया व्रत और पूजा निश्चित रूप से भगवान शिव की कृपा दिलाती है।

हिंदू नववर्ष का शुभारंभ है गुड़ी पड़वा, कथा के साथ जानें इससे जुड़े रोचक तथ्य

महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा को विजय के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है। मराठी समुदाय के लोग आज के दिन बांस की लकड़ी को लेकर उसके ऊपर चांदी, तांबे या पीतल के कलश को उल्टा रखते हैं। इसको केसरिया रंग के पताके और नीम की पत्तियों से सजाया...

महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा को विजय के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है।

मराठी समुदाय के लोग आज के दिन बांस की लकड़ी को लेकर उसके ऊपर चांदी, तांबे या पीतल के कलश को उल्टा रखते हैं। इसको केसरिया रंग के पताके और नीम की पत्तियों से सजाया जाता है। फिर घर पर सबसे ऊंची जगह पर लगा देते हैं। अलग-अलग जगह में इसे विभिन्न तरह के नामों से जाना जाता है। गोवा और केरल में कोंकणी समुदाय इसे संवत्सर पड़वो नाम से मनाता है। कर्नाटक में इस पर्व को युगाड़ी नाम से जाना जाता है।

गुड़ी पड़वा का महत्वः गुड़ी पड़वा के त्यौहार को हिंदू नववर्ष का शुभारंभ माना जाता है। गुड़ी का अर्थ होता है विजय पताका और पड़वा का मतलब होता है चंद्रमा का पहला दिन। गुड़ी पड़वा को वर्ष प्रतिपदा और युगादि के नाम से भी जाना जाता है। आज का ये दिन बहुत ही खास होता है क्योंकि आज से हिंदू नववर्ष की शुरुआत होती है। मुख्य रूप से गुड़ी पड़वा का त्यौहार महाराष्ट्र राज्य में मनाया जाता है। गुड़ी पड़वा का मतलब अगली फसल वर्ष की शुरुआत का प्रतीक है। तो आइए जानते हैं गुड़ी पड़वा के बारे में कुछ रोचक बातें।

आज के दिन महान ज्योतिषाचार्य और गणितज्ञ भास्कराचार्य ने सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन, महीने और वर्ष की गणना करते हुए पंचांग की रचना की थी। इस तिथि पर चंद्रमा के चरण का पहला दिन होता है।

गुड़ी पड़वा की पौराणिक कथाः मान्यताओं के अनुसार त्रेता युग में दक्षिण भारत में राजा बली के शासन के समय जब प्रभु श्री राम माता सीता को रावण से मुक्त कराने के लिए लंका की तरफ जा रहे थे। रास्ते में उनकी मुलाकात सुग्रीव के साथ हुई। सुग्रीव ने प्रभु श्री राम को बाली के आतंक के बारे में सारी बात बताई। तब प्रभु श्री राम ने बाली का वध कर उसके आतंक से सुग्रीव को मुक्त कराया। कहते हैं उसी दिन से दक्षिण में गुड़ी पड़वा के तौर पर मनाया जाता है तथा विजय पताका फहराई जाती है।

लघु सचिवालय का औचक निरीक्षण, नागरिक सुविधाओं को सर्वोच्च प्राथमिकता दें अधिकारी-डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल

परिवहन विशेष न्यूज

अंत्योदय सरल केंद्र की व्यवस्थाओं की गहन समीक्षा, सेवाओं में पारदर्शिता व समयबद्धता सुनिश्चित करने के दिए निर्देश

झज्जर, 17 मार्च। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने मंगलवार को लघु सचिवालय का औचक निरीक्षण करते हुए विभिन्न शाखाओं में कार्यप्रणाली का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने कार्यालयों में आने वाले नागरिकों को दी जा रही सेवाओं की गुणवत्ता, पारदर्शिता एवं समयबद्धता की विस्तार से समीक्षा की। इसके उपरांत उन्होंने लघु सचिवालय परिसर स्थित अंत्योदय सरल केंद्र का भी निरीक्षण किया तथा वहां उपलब्ध व्यवस्थाओं का गहनता से अवलोकन किया। इस अवसर पर झज्जर एसडीएम अंकित कुमार चौकसे व डीआईओ अमित बंसल भी उनके साथ मौजूद रहे।

निरीक्षण के दौरान उपायुक्त ने स्पष्ट निर्देश देते हुए कहा कि लघु सचिवालय प्रशासन का प्रमुख केंद्र है, जहां प्रतिदिन बड़ी संख्या में नागरिक अपनी समस्याओं के समाधान एवं विभिन्न सेवाओं का लाभ लेने के लिए आते हैं। ऐसे में यह सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है कि प्रत्येक नागरिक को सहज, पारदर्शी एवं समयबद्ध तरीके से सेवाएं उपलब्ध हों। उन्होंने कहा कि किसी भी स्तर पर लापरवाही या अनावश्यक देरी आमजन के विश्वास को प्रभावित करती है, जिसे किसी भी सूरत में स्वीकार नहीं किया जाएगा।

अंत्योदय सरल केंद्र के निरीक्षण के दौरान डीसी ने पेपरलेस रजिस्ट्रेशन प्रणाली, टोकन व्यवस्था, जमाबंदी सेवाएं, प्रतीक्षा कक्ष, बैठने की सुविधा, स्टॉल टेस्ट, साफ-सफाई, सूचना पट्ट, हेल्प डेस्क तथा विभिन्न काउंटरों की कार्यप्रणाली का बारीकी से निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी सेवाएं निर्धारित समयसीमा के भीतर प्रदान की जाएं तथा नागरिकों को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े।

उपायुक्त ने कर्मचारियों को विशेष रूप से निर्देशित किया कि वे आमजन के साथ शालीन, संवेदनशील एवं सहयोगात्मक व्यवहार करें। उन्होंने कहा कि नागरिकों की समस्याओं को गंभीरता से सुनकर यथासंभव मौके पर ही समाधान किया जाए, ताकि उन्हें बार-बार कार्यालयों के चक्कर न लगाने पड़ें। उन्होंने यह भी कहा कि सरल केंद्र में आने वाले लोगों को आवश्यक जानकारी स्पष्ट एवं सरल भाषा में उपलब्ध कराई जाए, जिससे पारदर्शिता और विश्वास का वातावरण मजबूत हो।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि अंत्योदय सरल केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को आमजन तक पहुंचाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। इसकी कार्यप्रणाली जितनी अधिक प्रभावी, पारदर्शी एवं उत्तरदायी होगी, उतना ही नागरिकों का प्रशासन के प्रति विश्वास सुदृढ़ होगा। उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि केंद्र में निर्बाध सेवाएं सुनिश्चित करने के लिए बिजली बैकअप, आईटी सिस्टम की सुचारू कार्यप्रणाली एवं अन्य आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।

उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि सरल केंद्र एवं लघु सचिवालय में कार्य व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए नियमित मॉनिटरिंग की जाए तथा समय-समय पर समीक्षा बैठकों के माध्यम से कमियों को दूर किया जाए। साथ ही, नागरिकों से प्राप्त फीडबैक के आधार पर सेवाओं में निरंतर सुधार लाया जाए, ताकि प्रशासनिक सेवाएं और अधिक प्रभावी एवं जनहितैषी बन सकें।

उपायुक्त ने अंत में कहा कि जिला प्रशासन का उद्देश्य आमजन को सुगम, पारदर्शी एवं जवाबदेह सेवाएं उपलब्ध कराना है, और इसके लिए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पूर्ण जिम्मेदारी एवं संवेदनशीलता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करना होगा।

चैत्र नवरात्र मेला में श्रद्धालुओं को जरूरी सुविधाएं प्रदान करने के लिए प्रशासन सजग : डीसी

परिवहन विशेष न्यूज

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बेरी में देवी मेला की तैयारियों को लेकर अधिकारियों को दिए निर्देश, -बाहरी और अंदर वाले मंदिर परिसरों में तैयारियों का भी लिया जायजा

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने देवी माता के दर्शन कर पूजा अर्चना की

-बेरी स्थित माता भीमेश्वरी देवी मंदिर में 24 से 26 मार्च तक आयोजित होगा मुख्य मेला

बेरी(झज्जर),17 मार्च। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने धर्मनगरी बेरी स्थित माता भीमेश्वरी देवी मंदिर परिसर में मंगलवार को अधिकारियों के साथ चैत्र नवरात्र मेला की तैयारियों का जायजा लिया और मौके पर आवश्यक दिशा निर्देश भी दिए। इससे पहले डीसी ने अंदर वाले मन्दिर में माता के दर्शन कर पूजा अर्चना की।

उन्होंने कहा कि माता भीमश्वरी देवी दर्शन के लिए देश के कोने - कोने से श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं। श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा ना हो,इसके लिए जरूरी सुविधाएं प्रदान करने के लिए प्रशासन सजग है। इस बीच डीसी ने 24 मार्च से 26 मार्च तक लगने वाले चैत्र नवरात्र मुख्य मेला के दौरान धर्मनगरी बेरी आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए आवश्यक प्रबंधों को लेकर विभागीय अधिकारियों के साथ विस्तार से समीक्षा की।

एसडीएम एवं माता भीमेश्वरी देवी श्राइन बोर्ड की सीईओ रेणुका नांदल ने डीसी को मेला की तैयारियों की जानकारी देते हुए बताया कि 19 मार्च से नवरात्र पर्व शुरू हो रहा है, इस बार मुख्य मेला 24 मार्च से 26 मार्च को होगा।

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने कहा कि बेरी मेला में सप्तमी और अष्टमी के दिन मां भीमेश्वरी देवी के दर्शनों के लिए श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ती है। ऐसे में मेला के पिछले अनुभवों के आधार पर श्रद्धालुओं का अनुमान लगाते हुए मेला परिसर में सुरक्षा व अन्य मूलभूत सुविधाओं को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही नहीं होनी चाहिए। उन्होंने मेला परिसर में ड्यूटी देने वाले कर्मचारियों के पहचान पत्र, पार्किंग, सुरक्षा, पीने के पानी, रात्रि के समय रोशनी के इंतजाम, स्वास्थ्य सुविधाएं, अस्थाई शौचालय, सीसीटीवी, माइक सर्विस, अग्निशमन सेवाएं आदि इंतजामों का बारीकी से निरीक्षण किया।

डीसी ने मेला के दौरान तहबाजारी तथा संवेदनशील दिवसों की पहचान को लेकर भी संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि श्रद्धालुओं की उमडने वाली भीड़ को लेकर कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए ड्यूटी मजिस्ट्रेट भी नियुक्त किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि व्यवस्था करते समय यह ध्यान रखा जाए कि धर्मनगरी बेरी के मेले में पहुंचने वाले किसी भी श्रद्धालु माता के दर्शन करने व आवागमन में कोई भी परेशानी न हो। उन्होंने 24 से 26 मार्च तक लगने वाले अश्व मेला को लेकर भी बीडीपीओ और पशुपालन विभाग के अधिकारियों से जानकारी ली।

उन्होंने स्पष्ट किया कि मेला के दौरान लगने वाले भंडारों में सिंगल यूज प्लास्टिक पर पूरी तरह पाबंधी रहेगी। जिसके चलते स्टील बर्तन का उपयोग किया जाए। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को मंदिर परिसर में नवरात्र से ही मेडिकल यूनिट स्थापित करने के निर्देश दिए। साथ ही श्रद्धालुओं के जरूरत अनुसार टोकन सुविधा बढ़ाई जाए।

यह अधिकारी रहे मौजूद

इस अवसर पर एडीसी जगनिवास, नपा चेयरमैन देवेंद्र कादयान,सीएमओ डॉ मंजू कादयान, एसीपी अनिल कुमार, तहसीलदार शेखर, डीआईपीआरओ सतीश कुमार, डीआईओ अमित बंसल, बीडीपीओ राजाराम, नायब तहसीलदार सुरेंद्र कुमार, नपा सचिव पूजा साहू, देवी मंदिर से पंडित कुलदीप वशिष्ठ, एसडीओ लोक निर्माण विभाग अजय कुमार, पशुपालन विभाग के एसडीओ डॉ ऋषिपाल, बीएओ डॉ अशोक रोहिल्ला, बीईओ रोहताश दहिया सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

सफल व शांतिपूर्ण परीक्षाएं हों, यही प्रशासन का प्रथम उद्देश्य : रेणुका नांदल

- एसडीएम रेणुका नांदल ने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जहाजगढ़ में बोर्ड परीक्षा केंद्रों का किया औचक निरीक्षण

परिवहन विशेष न्यूज

बेरी (झज्जर), 17 मार्च। उपमंडल के चिन्हित स्कूलों में चल रही हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं के नकल रहित संचालन को लेकर एसडीएम रेणुका नांदल ने मंगलवार को राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जहाजगढ़ में बने परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण किया। परीक्षाओ की पवित्रता बनाए रखने और नकल रहित परीक्षाओं के संचालन के लिए डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल के निर्देशन में

उपमंडल प्रशासन गंभीरता से कार्य कर रहा है।

एसडीएम नांदल ने परीक्षा केंद्रों का जायजा लेते हुए शिक्षा विभाग के अधिकारियों से परीक्षा से जुड़ी जानकारी ली और आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि नकल से पास की गई परीक्षा स्वयं विद्यार्थी के लिए ही खतरनाक है। नकल रहित परीक्षा से ही भविष्य संवर सकता है। इसलिए सफल व शांतिपूर्ण परीक्षा करवाना प्रशासन का प्रथम उद्देश्य है। परीक्षा केंद्रों की जांच के लिए विभिन्न फ्लाइंग स्क्वायड का गठन किया गया है। साथ हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की फ्लाइंग स्क्वायड भी निरंतर केंद्रों का निरीक्षण कर रही है।

उन्होंने परीक्षा केंद्रों के बाहर तैनात पुलिसकर्मियों को निर्देश दिए कि परीक्षा में किसी प्रकार की हेराफेरी और गड़बड़ी रोकने के लिए पुलिस अलर्ट मोड में रहें। उन्होंने कहा कि परीक्षाओं में कोई भी व्यक्ति विघ्न डालने की चेष्टा करें तो कड़ी कार्रवाई करें।

बरवाला के पत्रकारों ने हरियाणा विधानसभा में देखा बजट सत्र का लाइव प्रसारण, मंत्री रणबीर सिंह गंगवा ने बताया पत्रकारिता का महत्व

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) हरियाणा सरकार के लोकनिर्माण विभाग एवं जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री रणबीर सिंह गंगवा ने बरवाला शहर के सभी पत्रकारों को हरियाणा विधानसभा में ले जाकर बजट सत्र की कार्यवाही का लाइव प्रसारण दिखाया। इससे पूर्व उन्होंने अपने आवास पर सभी पत्रकारों को भोजन हेतु आमंत्रित किया।

इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री रणबीर सिंह गंगवा ने सभी पत्रकारों को कलम और डायरी भेंट कर सम्मानित किया तथा हरियाणा के बजट से जुड़ी महत्वपूर्ण बातों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार का बजट प्रदेश के सर्वांगीण विकास, किसानों, युवाओं और आमजन के हितों को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है।

रणबीर सिंह गंगवा ने कहा कि पत्रकार लोकतंत्र का चौथा स्तंभ हैं और समाज को सही दिशा देने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पत्रकार निष्पक्षता और जिम्मेदारी के साथ समाज की आवाज को सरकार और प्रशासन तक पहुंचाने का कार्य करते हैं। उन्होंने कहा कि मीडिया समाज में जागरूकता फैलाने के साथ-साथ जनहित के मुद्दों को प्रमुखता से उठाकर लोकतंत्र को मजबूत बनाने का काम करता है।

इस अवसर पर पूर्व चेयरमैन सतबीर वर्मा एवं पूर्व चेयरमैन रणधीर सिंह धीरू ने सभी पत्रकारों का स्वागत किया और उनके कार्य की सराहना की।

कार्यक्रम में पूर्व आईपीएस दलबीर भारती, जिला प्रभारी युवा मोर्चा भाजपा डबवाली संजीव गंगवा, पूर्व पार्षद सुंदर गोयल, प्रवीण बंसल, विनोद मित्तल, जिला आईटी सह प्रमुख भाजपा कमल हंदूजा, जिला आईटी टोली सदस्य शुभम मदान एवं तरसेम पूनिया तथा मंडल मीडिया प्रभारी राजेश सलूजा,कपिल मेहता,संजय गिरधर,कृष्ण सलूजा,वीरेंद्र सोनी,राजकुमार सरदाना,गणेश वलेचा,मनु,सतबीर चहल,अंग्रेज बुरा,राहुल भुक्कल,सौरभ मित्तल,कृष्ण सलूजा,कुलदीप पूनिया,अनूप कुंडू,जितेंद्र कुमार,विनोद भारती,मंडल महामंत्री मिलगेट आशीष जांगड़ा सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

जिला स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर एक दिवसीय फैंसी क्रिकेट

रिपोर्टर संतोष कुमार चतुर्वेदी

कैमूर। 17 मार्च 2026 जिला स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर एक दिवसीय फैंसी क्रिकेट फाइनल मैच सरदार वल्लभभाई पटेल कॉलेज खेल मैदान में जिला प्रशासन बनाम मीडिया बंधुओं के बीच खेला गया मुख्य अतिथि माननीय जिला पदाधिकारी कैमूर, विशिष्ट अतिथि आरक्षी अधीक्षक , अनुमंडल पदाधिकारी भभुआ ,कला संस्कृति पदाधिकारी सौरभ सुमन डीपीओ शिक्षा विभाग विकास कुमार डीएन ,डिप्टी कलेक्टर उज्जवल कुमार, कला संस्कृति पदाधिकारी सुमन सौरव ,एसडीएम अमित कुमार, जिला भू अर्जन पदाधिकारी अरविंद कुमार, डीपीओ मोहन कुमार जल शक्ति ,डीपीओ मनरेगा ,डीपीएम जीविका, एसपी कैमूर के उपस्थिति में जिला पदाधिकारी द्वारा फीता काटकर क्रिकेट मैच का उद्घाटन किया गया। सर्व प्रथम सभी मुख्य अतिथि,विशिष्ट को पुष्प गुच्छ स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। जिला प्रशासन ,मीडिया बंधुओं के बीच टॉस कराया गया जिसमे मीडिया टॉस जीतकर बल्लेबाजी का फैसला लिया गया मीडिया बंधुओं की टीम के स्टार खिलाड़ी मनीष राज गौरव 3 छक्का,तीन चौका, मिलाकर 33 रन की पारी,वही शुभम सिंह एक चौका सहित कुल 9 रन रणजीत कुमार एक छक्के की मदद से 8 रन,संदीप कुमार एक चौका मिलाकर 5 रन इस प्रकार मीडिया बंधु की टीम कुल मिलकर 12 ओवर में 88 रन बनाए। जिला प्रशासन की टीम के स्टार खिलाड़ी जिला कार्यक्रम पदाधिकारी समग्र शिक्षा अभियान विकास कुमार उत्कृट प्रदर्शन करते हुए एक छक्का,दो चौका की मदद के कुल 16 रन,वही उपाधीक्षक शारीरिक शिक्षा ओम प्रकाश कुमार तीन चौका की मदद से कुल 15 रन ,शारीरिक शिक्षक कमलेश कुमार अनुशासित उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए तीन छक्का,तीन,चौका की मदद से कुल 32 रन,वही जीविका डीपीएम कैमूर 16 रन की पारी खेलते हुए जिला पदाधिकारी ने तीन तीन विकेट लेकर आठ विकेट से जिला प्रशासन की टीम विजय प्राप्त किया। जिला पदाधिकारी द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए से तीन विकेट लिए। मैन ऑफ दी मैच जिला पदाधिकारी की दिया गया। सभी उप विजेता, विजेता टीम को कप देकर सम्मानित किया गया। अंपायर,वसीम अली उमेश प्रसाद, व स्कोरर सूरज कुमार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई मंच का संचालन डॉ श्री कृष्ण सिंह, फुटबॉल के वरीय खिलाड़ी सह संयोजक शौकत अली गद्दी ने संयुक्त रूप से किया।इस मौके पर उपाधीक्षक शारीरिक शिक्षा ओम प्रकाश कुमार खेल प्रेमी बिरजू पटेल शारीरिक शिक्षक डॉ तुलसी प्रसाद सिंह,दिलीप कुमार पटेल, इम्तियाज अली,पप्पू कुमार, असरफ अली,राजू सोनी, जीरान अली,मीडिया बंधु,प्रेस क्लब सचिव मनीष पांडेय,अमित कुमार, विकास कुमार,आदि,जिला प्रशासन व तमाम क्रिकेट प्रेमी सहित सैकड़ो दर्शक मौजूद थे।

कानपुर में हत्या कर खेत में गाड़ी बच्ची की लाश, पुलिस के खिलाफ जमकर बवाल, हिरासत में एक

सुनील बाजपेई। कानपुर। यहां 11 साल की एक बच्ची की हत्या कर दी गई । आज मंगलवार को उसकी लाश खेत में गाड़ी हुई पाई गई। इसके विरोध में गांव वालों ने पुलिस के खिलाफ जमकर बवाल भी किया। फिलहाल पुलिस रिपोर्ट दर्ज कर आरोपियों की तलाश कर रही है । यह घटना बिधनू थाना क्षेत्र में हुई। जब पुलिस मौके पर पहुंची तब शव पर कपड़े का एक टुकड़ा भी नहीं था। चोट के गहरे निशान थे। आशंका जताई जा रही है कि रेप के बाद बच्ची का मर्डर किया गया। परिवार वालों ने पड़ोसी पर वारदात को अंजाम देने का आरोप लगाते हुए हंगामा किया। उसका घर फूंकने की कोशिश की। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मोर्चा संभाला। भीड़ को तितर-बितर किया। गुस्साए लोगों को शांत कराया। आरोपी के घर को घेरकर जांच शुरू की। जानकारी के मुताबिक इसदौरान पड़ताल के दौरान पुलिस को आरोपी पड़ोसी के घर से मिट्टी से सने कपड़े टंगे मिले। फोरेंसिक टीम ने इसे कब्जे में ले लिया है। आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। घटना के बारे में प्राप्त विवरण के अनुसार बिधनू थाना क्षेत्र के एक गांव में रहने वाले युवक ने बताया कि उनकी 11 साल की बेटी थी। 5वीं में पढ़ती थी। बच्ची बड़ी बहन के साथ सोमवार दोपहर 3 बजे बकरियां चराने के लिए गई थी। इसी के बाद वहां लापताहो गई । इसके बाद उसके घर वालों ने आसपास के लोगों के साथ गांव में खोजबीन की, जब कुछ पता नहीं चला तो शाम 7 बजे बिधनू थाने पहुंचकर पुलिस को सूचना दी। इसी के बाद उसकी लाश खेत में गड़ी हुई बरामद की गई ,जिसके बाद पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कर घटना की जांच शुरू कर दी है। साथ हीआरोपित किए गए युवक को भी हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। घटना के खिलाफ क्षेत्रीय लोगों में जबरदस्त रोष भी व्याप्त है ,जिसे देखते हुए वहां बड़ी संख्या में पुलिस बल भी तैनात किया गया है।

भाविप शाखा बरवाला ने जरूरतमंद दो कन्याओं की

हरियाणा/ हिसार (राजेश सलूजा) : समाजसेवी संस्था भारत विकास परिषद विवेकानंद शाखा बरवाला द्वारा वार्ड 15 बरवाला में दो जरूरतमंद कन्याओं की शादी में भाविप शाखा बरवाला अध्यक्ष सुरेंद्र सोनी की अध्यक्षता में दहेज का आवश्यक घरेलू सामान दिया गया। अध्यक्ष सुरेंद्र सोनी ने कहा कि जरूरतमंद की सेवा ही सबसे बड़ी सेवा है। इससे पूर्व करोना के समय में भी अध्यक्षा सुनीता मनचंदा के कार्यकाल में जरूरतमंद दो कन्याओं की शादी में दहेज का आवश्यक घरेलू सामान दिया गया था। भारत विकास परिषद विवेकानंद शाखा बरवाला समय-समय पर जरूरतमंद लोगों की सेवा करती रहती है। उन्होंने लोगों से भी समय-समय पर जरूरतमंद लोगों की सेवा करने का आह्वान किया। इस अवसर पर अध्यक्ष सुरेंद्र सोनी, पूर्व अध्यक्ष वीरभान मिडडा, ओमप्रकाश मनचंदा, सुनीता मनचंदा, सुदेश चहल पूनिया, आशा चुघ, मंजू, वरिष्ठ समाजसेविका सुनीता पठनेजा व मंजू सोनी आदि मौजूद रहे।

शब्द श्रद्धाजंलि - डॉ रामकिशोर दयाराम पंवार रोंढ़ावाला

जाते - जाते भी अपने पिता के यश कीर्ति को चार चांद लगा गई बेटी सुरभि खण्डेलवाल

आम आदमी से लेकर खास आदमी, मुख्यमंत्री से लेकर संत्री और आईएएस से लेकर शासकीय सेवक तक पहुंचे श्रद्धाजंलि देने

आज सुरभि को गए 8 दिन बीत गए, आज पूरा जिला प्रदेश एवं देश के विभिन्न कोने - कोने से लोग अपने श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए अखण्डभारत के केन्द्र में बसे बैतूल जिला मुख्यालय पर चले आ रहे है। कल तक बैतूल नगर पालिका क्षेत्र के अनेक वार्डो के अनेक लोगो को यह तक नहीं मालूम था कि स्वर्गीय विजय कुमार खण्डेलवाल के परिवार में सुरभि नामक की विशेष चाइल्ड रहती थी। बीते 34 वर्षो तक गुमनामी की जिदंगी जी रही सुरभि जिसे बैतूल जिला भी पूरी तरह से नहीं जानता था आज भी प्रदेश - प्रदेश की मीडिया में सुर्खियो में है। उस फोटो पर अब तक हजारो लोगो के हाथो से पुष्पाजंलि अर्पित हो गई जिसकी लोगो को झलक तक देखनी को नहीं मिलती। जाते - जाते भी बेटी सुरभि एक ऐसा काम कर गई है मध्यप्रदेश के इतिहास में कोई नहीं कर सका। आज जिस सुरभि को श्रद्धाजंलि या पुष्पाजंलि देने को मध्यप्रदेश का कांग्रेसी से लेकर भाजपाई विधायक जिलाध्यक्ष से लेकर आम पार्टी कार्यकत्ता दौड़ा चला आ रहा है वह कल शायद न आता जब सुरभि देव लोक को प्रस्थान न करती। अपने मायके में 34 साल तक रही सुरभि जरूरी नही था कि 11 मार्च दिन बुधवार 2026 को ही देव लोक गमन को चल गई लेकिन तीथी एवं संयोग ने आज इस स्पेशल चाइल्ड की वजह से हेमंत खण्डेलवाल को उस मुकाम पर पहुंचा दिया जिसकी कल्पना या परिकल्पना तक नहीं की जा सकती थी। मध्यप्रदेश के अनेक गुमनाम से लेकर वर्तमान आई ए एस और आई पी एस अधिकारी श्रद्धाजंलि देने के लिए बैतूल आकर चले जा रहे है। ऐसे चेहरे जो बैतूल में रह चुके है या जो बैतूल आने को इच्छुक है सभी ने सरभि के बहाने ही सही लेकिन बैतूल की माटी को नमन करने का अवसर नहीं छोड़ा। इस बात में अतिश्योति नहीं कि अगर लोकसभा का सत्र नहीं चल रहा होता तो देश का रक्षा मंत्री बैतूल में अपनी उपस्थिति दर्ज करवा चुका होता। स्वर्गीय विजय कुमार खण्डेलवाल के बेहद करीबी एवं मित्र रहे केन्द्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह पूर्व में स्वर्गीय विजय कुमार खण्डेलवाल को श्रद्धाजंलि देने के लिए बैतूल आ चुके है। श्री राजनाथ सिंह के करीबी एवं परिवारिक लोगो में बैतूल का खण्डेलवाल परिवार का नाम है। बैतूल में सुरभि खण्डेलवाल के दुखद निधन के बाद से अब तक अनेको लोग अपने - अपने संसाधनो से बैतूल आकर जा चुके है। एक अप्रमाणिक जानकारी के अनुसार मध्यप्रदेश में अनेक सत्ताधारी एवं विपक्ष के नेताओ, मंत्रियो के परिवार में कोई न कोई उनके पद पर रहते या पद न रहते देवलोक गमन को गया होगा लेकिन उन सब के घरो पर इतनी बड़ी दस्तक आज

तक देखने को नहीं मिली जो इस समय बैतूल में देखने को मिली। अंतिम संस्कार या श्रद्धाजंलि देने के लिए एक दिन हजारो की भीड़ संभव है लेकिन लगातार बुधवार 11 मार्च 2026 से खबर लिखे जाने तक आम आदमी से लेकर खास आदमी की तक की उपस्थिति कम से कम बैतूल एवं उसके आसपास के जिले में तो देखने को नहीं मिली।

उल्लेखनीय है कि मार्च के तीसरे सप्ताह के पहले सोमवार 16 मार्च 2026 को मध्यप्रदेश भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक बैतूल श्री हेमन्त खंडेलवाल के निवास पहुंचकर दिवंगत सुश्री सुरभि खंडेलवाल को श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में मध्यप्रदेश के स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री श्री राव उदय प्रताप सिंह, आरएसएस के मध्य क्षेत्र बौद्धिक प्रमुख श्री सुहास भगत, आरएसएस के मध्य क्षेत्र सह बौद्धिक प्रमुख श्री हितानंद शर्मा, सिरमौर (रीवा) विधायक श्री दिव्यराज सिंह, सेवड़ा (दतिया) नगर पालिका अध्यक्ष श्री सतेंद्र सिंह नागिल, पन्ना विधायक श्री बृजेंद्र प्रताप सिंह, विदिशा से श्री बहादुर सिंह रघुवंशी, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष शिवपुरी श्री जितेंद्र जैन गोटू, श्री बृज किशोर भार्गव, प्रांशु राणे, पूर्व भाजपा जिला कोषाध्यक्ष भिंड, श्री शोभित अग्रवाल , पूर्व प्रदेश भाजपा उपाध्यक्ष श्री वेद प्रकाश शर्मा, पूर्व विधायक श्री मुन्नालाल गोयल, पूर्व प्रदेश कार्य समिति सदस्य श्री मधुसूदन चौधरी, भाजपा जिला महामंत्री ग्वालियर श्री विनय जैन, छिंदवाड़ा सांसद श्री बंटी साहू , पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष अशोक नगर श्री मलकी सिंह सिंधु, भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष श्री अवनेंद्र पटेरिया, श्री हेमंत विजय राव देशमुख, वारासिवनी के पूर्व एमएल श्री प्रकाश बाफना, भाजपा जिला उपाध्यक्ष भिंड श्रीमती पिंकी शर्मा, मध्यप्रदेश मानव अधिकार आयोग के अध्यक्ष श्री डॉ अवधेश प्रताप सिंह, भिंड जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती कामना भदौरिया, बुरहानपुर महापौर श्रीमती माधुरी अतुल पटेल, पूर्व मंत्री श्री अनूप मिश्रा, विधायक बागली (विदिशा) श्री मुरली भवरा, विधायक देवरस (रीवा) श्री सिद्धार्थ तिवारी, पूर्व प्रदेश संगठन महामंत्री श्री माखन सिंह चौहान, पूर्व विधायक मनगवां (रीवा) श्री पंचूलाल प्रजापति, श्री रामभरोसी शर्मा ग्वालियर, विधायक भिंड श्री नरेंद्र सिंह कुशवाह, श्री मनोज यादव मुरैना, श्री महेंद्र यादव ग्वालियर , श्री प्रहलाद पटेल पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री, श्री अजय विश्नोई विधायक पाटन (जबलपुर) , पूर्व राष्ट्रीय संगठन महामंत्री श्री संजय विनायक जोशी, पूर्व मंत्री श्री सुखदेव पांसे, श्री मनोज मालवे आमला, निर्मला सप्रे विधायक बीना, पूर्व मंत्री श्री रामखिलावन पटेल, पूर्व मंत्री श्री रामनिवास रावत, श्री गजेन्द्र सिंह पटेल, सांसद खरगोन, श्री नागर सिंह चौहान मंत्री अनुसूचित जाति कल्याण विभाग, श्री डॉ गौतम टेटवाल राज्य मंत्री कौशल विकास एवं रोजगार, श्री कैलाश विजयवर्गीय मंत्री नगरीय विकास एवं आवास संसदीय कार्य विभाग, श्री डॉ रामकृष्ण कुसमरिया अध्यक्ष मध्यप्रदेश राज्य पिछड़ा वर्ग एवं मध्यप्रदेश पिछड़ा वर्ग कल्याण आयोग, श्री डॉक्टर महेंद्र सिंह मध्यप्रदेश प्रभारी, श्री गोपाल सिंह विधायक आष्टा, श्री डॉ पी आर बोडखे पूर्व विधायक मुलताई, श्रीमती प्रतिभा बागरी राज्य मंत्री नगरीय विकास एवं आवास विभाग, कविता पाटीदार राज्य सभा सांसद, श्री अशोक पाराशर, सोनू धाकड़ टेटरा सबलगढ़, श्री विश्वामित्र पाठक विधायक, श्री कुंवर सिंह टेकाम विधायक, श्री तपन चौधरी जिला संयोजक बालाघाट, श्री सुशील कुमार तिवारी विधायक पनागर, श्री अभिलाष पांडे विधायक जबलपुर, श्री उमाशंकर राजपूत सह कार्यालय मंत्री युवा मोर्चा, श्री श्याम टेलर युवा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष, श्री वैभव पवार पूर्व प्रदेश अध्यक्ष युवा मोर्चा, श्री अनिरुद्ध मारू विधायक, श्री दिलीप सिंह परिहार जिला अध्यक्ष नीमच, पूर्व विधायक श्री सुभाष रामचरित, श्री प्रेम सिंह राजपूत जिला अध्यक्ष ग्वालियर, श्री राहुल तिवारी प्रदेश महामंत्री युवा मोर्चा, श्री राजकुमार करांहे विधायक लांजी, श्री राजकुमार सबनानी विधायक भोपाल, श्रीमती ममता भदौरिया भाजपा प्रदेश संयोजक महिला एवं स्वसहायता समूह, श्री वीरेंद्र भदौरिया जिला उपाध्यक्ष ग्वालियर, श्री जितेंद्र लिटोरिया, अलीराजपुर सांसद श्रीमती अनीता नागर सिंह चौहान, पूर्व विधायक श्री जालम सिंह पटेल, श्री श्रवण सिंह चौहान जिला अध्यक्ष इंदौर, श्री जयप्रकाश चतुर्वेदी जिला अध्यक्ष पन्ना, श्री रवि जैसवाल पूर्व नपा अध्यक्ष इटारसी, श्री राकेश गुप्ता नपा बड़वाह , श्री पंकज सिंह तेकाम प्रदेश अध्यक्ष अजजा मोर्चा, श्री सोहन सिंह प्रदेश महामंत्री अजा मोर्चा, श्री गौरव सिसोदिया संभाग प्रभारी शहडोल शामिल का नाम शामिल हैं।

अत्याधुनिक मशीनों से निःशुल्क जांच

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। जटाशंकर स्थित कल्याण पैलेस में मंगलवार को आयोजित निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर में सिंधी समाज की बड़ी भागीदारी देखने को मिली। मंगलवार को सुबह से ही लोग परिवार सहित जांच कराने पहुंचने लगे और देखते ही देखते परिसर में अच्छी-खासी भीड़ जुट गई। मेदांता हॉस्पिटल, लखनऊ और गोरखपुर सिंधी यूथ फाउंडेशन के संयुक्त प्रयास से आयोजित इस शिविर में सैकड़ों लोगों ने अपनी स्वास्थ्य जांच कराई।

शिविर में डॉ. हिमांशु शेखर पांडेय के नेतृत्व में आई

चिकित्सकों की टीम ने दोपहर 12 बजे से शाम 3 बजे तक लगातार मरीजों की जांच की। इस दौरान ईसीजी, ब्लड शुगर, फेफड़ों की जांच, हड्डियों की जांच, आंखों और दांतों की जांच जैसी सुविधाएं निःशुल्क उपलब्ध कराई गईं। जांच के साथ-साथ लोगों को उनकी सेहत के अनुसार जरूरी सलाह भी दी गई।

डॉक्टरों ने बताया कि कई लोगों में शुरुआती स्तर पर ही स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के संकेत मिले हैं, जिनका समय रहते उपचार संभव है। उन्होंने लोगों से नियमित जांच कराने, संतुलित आहार लेने और दिनचर्या में थोड़ी सावधानी बरतने की सलाह दी।

शिविर में खासतौर पर महिलाओं और बुजुर्गों की अच्छी भागीदारी रही। कई परिवार एक साथ पहुंचे और सभी सदस्यों की जांच कराई। इससे यह साफ नजर आया कि अब लोग अपने स्वास्थ्य को लेकर पहले से ज्यादा जागरूक हो रहे हैं।

युवा सिंधी समाज के महामंत्री देवा केशवानी ने बताया कि यह आयोजन समाज सेवा के उद्देश्य से किया गया था। समाज के लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, जिससे यह शिविर सफल हो सका।

पूर्व पार्षद की दिनदहाड़े हत्या

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। मॉर्निंग वॉक पर निकले पूर्व पार्षद राजकुमार चौहान की चाकू से गोदकर हत्या कर दी गई। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, सुबह करीब साढ़े 5 बजे चार हमलावरों ने उन्हें घेर लिया और ताबड़तोड़ हमला किया। जान बचाने के लिए चौहान करीब 100 मीटर तक भागे, लेकिन बदमाशों ने पीछा कर दोबारा हमला किया। गवाहों ने बताया कि हमलावरों ने सीने, सिर और हाथ पर कई वार किए और मौके पर रुककर उनकी मौत की पुष्टि करने के बाद फरार हो गए। सूचना पर पहुंचे परिजन उन्हें बीआरडी मेडिकल कॉलेज ले गए, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया।

घटना चिलुआताल थाना क्षेत्र में मंगलवार को हुई, जो गोरखनाथ मंदिर से करीब 5 किमी दूर है। वारदात के बाद इलाके में तनाव फैल गया और 200 से अधिक लोगों ने गोरखपुर-सोनौली रोड जाम कर हंगामा किया। हालात काबू में करने के लिए 10 थानों की पुलिस तैनात की गई है।

बताया जा रहा है कि चौहान 2027 विधानसभा चुनाव की तैयारी कर रहे थे।

धोखाधड़ी कर 1.20 लाख रुपये लेने के मामले में तीन आरोपियों को कोर्ट ने किया तलब

संवाददाता: शिवेंद्र यादव

बदायूं। धोखाधड़ी कर रुपये लेने तथा विरोध करने पर गाली-गलौज और जान से मारने की धमकी देने के मामले में न्यायालय ने तीन आरोपियों के खिलाफ समन जारी कर उन्हें तलब किया है। न्यायालय ने प्रथम दृष्टया आरोपियों के खिलाफ धोखाधड़ी, गाली-गलौज और धमकी देने का मामला बनता पाया है।

मामले के अनुसार परिवादी मेहदी हसन ने वर्ष 2022 में न्यायालय में परिवाद दाखिल किया था।

प्रारंभिक सुनवाई के बाद 18 जनवरी 2023 को न्यायालय ने परिवाद को खारिज कर दिया था। इसके खिलाफ परिवादी ने सत्र न्यायालय में दाण्डिक पुनरीक्षण दाखिल किया। सत्र न्यायालय ने 2 दिसंबर 2023 को पूर्व आदेश को निरस्त करते हुए मामले को दोबारा सुनवाई के लिए अवर न्यायालय

को भेज दिया था।

इसके बाद अवर न्यायालय ने 29 जनवरी 2024 को आरोपियों आदिल, मुखबरी और मिशिल को धारा 504 और 506 के तहत तलब किया था। इस आदेश के खिलाफ फिर सत्र न्यायालय में निगरानी दाखिल की गई। सत्र न्यायालय ने 18 अगस्त 2025 को आदेश निरस्त करते हुए सभी साक्ष्यों पर विचार कर पुनः विधि के अनुसार निर्णय देने के निर्देश दिए। परिवादी के अनुसार 25 नवंबर 2020 को करीब 10 बजे आरोपी आदिल, मुखबरी और मिशिल उसके घर आए और बताया कि यासीन को हार्ट अटैक आया है तथा उसे इलाज के लिए बरेली ले जाया गया है। उन्होंने इलाज के लिए तत्काल 1.50 लाख रुपये की आवश्यकता बताते हुए मदद मांगी। इस पर परिवादी ने भरोसा करते हुए एक लाख रुपये अपने पास से तथा 20 हजार रुपये मोहम्मद तस्लीम से लेकर कुल 1.20 लाख रुपये आरोपियों को दे दिए।

कुछ समय बाद परिवादी को पता चला कि आरोपियों ने झूठ बोलकर उससे रुपये ले लिए। जब उसने रुपये वापस मांगे तो आरोपी टालमटोल करने लगे। 20 दिसंबर 2020 को ग्राम रहमा में एक शादी समारोह के दौरान परिवादी ने गवाहों मोहम्मद तस्लीम और आफताब के सामने रुपये वापस मांगे, जिस पर आरोपियों ने गाली-गलौज की और मारने के लिए दौड़ पड़े तथा जान से मारने की धमकी दी।

परिवादी ने अपने बयान के साथ-साथ गवाहों आफताब हुसैन और मोहम्मद तस्लीम के बयान भी न्यायालय में प्रस्तुत किए। दोनों गवाहों ने अपने बयानों में रुपये दिए जाने और बाद में रुपये मांगने पर आरोपियों द्वारा गाली-गलौज व धमकी देने की पुष्टि की।

सभी साक्ष्यों और सत्र न्यायालय के आदेश के अवलोकन के बाद न्यायालय ने पाया कि प्रथम दृष्टया आरोपियों के खिलाफ धोखाधड़ी, गाली-गलौज और धमकी देने का मामला बनता है।

न्यायालय ने आदिल, मुखबरी और मिशिल के विरुद्ध धारा 420, 504 और 506 भादंवि के तहत सम्मन जारी करते हुए उन्हें तलब किया है। साथ ही परिवादी को एक सप्ताह के भीतर आवश्यक पैरवी करने के निर्देश दिए गए हैं। मामले में अगली सुनवाई के लिए 23 मार्च 2026 की तिथि निर्धारित की गई है।

योजनाओं की प्रगति पर हुई चर्चा

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। मंगलवार को मंडलायुक्त सभागार में मंडलायुक्त अनिल ढींगरा की अध्यक्षता में विकास कार्यों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में विभिन्न विभागों की योजनाओं की प्रगति, क्रियान्वयन की स्थिति और लंबित कार्यों पर विस्तार से चर्चा की गई।

मंडलायुक्त ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी विकास कार्यों को समयबद्ध और गुणवत्ता के साथ पूर्ण कराया जाए। उन्होंने विशेष रूप से जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन पर जोर दिया और लापरवाही बरतने पर सख्त कार्रवाई की चेतावनी दी। बैठक में जिलाधिकारी दीपक मीणा, मुख्य विकास अधिकारी शाश्वत त्रिपुरारी, डीएफओ विकास यादव, मुख्य राजस्व अधिकारी हिमांशु वर्मा, एसडीएम सदर दीपक गुप्ता, पीडब्ल्यूडी नोडल अधिकारी ए.के. सिंह सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

झूलेलाल जन्मोत्सव का आगाज, गूंजे नगमें - झूमे सिंधीजन

लाड़ी लुहाणा सिंधी पंचायत सोसायटी ने कराया रक्तदान स्वामी लीलाशाह की शिक्षाओं से प्रेरित होकर 22 सिंधी युवाओं ने किया रक्तदान

मथुरा। सिंधी जनरल पंचायत द्वारा चल रहे सिंधी उत्सव पखवाड़े के अंतर्गत स्वामी लीलाशाह की शिक्षाओं से प्रेरित होकर लाड़ी लुहाणा सिंधी पंचायत सोसायटी द्वारा लाइफ केयर ब्लड बैंक में रक्तदान शिविर आयोजित किया गया, वहीं कृष्णा आर्चिड कॉलोनी में चेटीचंड पर्व का आगाज भी हुआ।

मुख्य संयोजक चंदनलाल आडवानी और संयोजक किशोर इसरानी एवं जितेंद्र लालवानी के नेतृत्व में उन्नति लखवानी, जितेंद्र उतवानी, कृष्णा साधवानी, हरिश उतवानी, तरूण नाजवानी, विजय मंगलानी, लहर केवलानी, मयंक गंगवानी, राहुल केवलानी, परषोत्तम मेठवानी, राजकुमारी केवलानी, चिराग मेठवानी, तुलसीदास, चिराग दासवानी, गिरिश खत्री, अशोक डाव्रा, कविता भाटिया, संजय लखवानी, सीतादेवी, जितेंद्र खत्री, अजित तथा सिंधी नवयुवक मंडल के अध्यक्ष तरूण लखवानी एवं भाटिया पंचायत के अध्यक्ष जितेंद्र भाटिया ने उत्साहपूर्वक रक्तदान करके पुण्य कमाया।

सिंधी उत्सव के मुख्य संयोजक रामचंद्र खत्री ने सभी रक्तदाताओं को बधाई देते हुए कहा कि स्वामी लीलाशाह जी ने भारतीय संस्कृति के पुनरोत्थान तथा सोई हुई आध्यात्मिकता को जगाने के साथ ही मानव सेवा का संदेश दिया था। रक्तदान करके युवाओं ने सचमुच महान कार्य किया है।

लाड़ी लुहाणा सिंधी पंचायत सोसायटी के अध्यक्ष सुरेश मेठवानी, जीवतराम चंदानी, बसंतलाल मंगलानी, कन्हैयालाल भाईजी तथा सिंधी जनरल पंचायत के अध्यक्ष नारायण दास लखवानी, रामचंद्र खत्री, सुदामा खत्री सहित मुख्य संयोजक चंदनलाल आडवानी और संयोजक किशोर इसरानी एवं जितेंद्र लालवानी ने रक्तदाताओं के उत्साह की सराहना की। ब्लड बैंक के निदेशक ब्रजेश शर्मा तथा राजकुमार ने रक्तदाताओं को सम्मान पत्र तथा उपहार स्वरूप हेलमेट भेंट कराए, वहीं आयोजक मंडल को भी स्मृति चिन्ह प्रदान किए।

मथुरा के कृष्णा आर्चिड में सिंधी उत्सव की धूम

मथुरा। भगवान झूलेलाल जन्मोत्सव का आगाज मंगलवार को शहर में हो गया। सिंधी जनरल पंचायत के तत्वावधान में चल रहे सिंधी उत्सव की अद्भुद झलक गोवर्धन मार्ग स्थित कृष्णा आर्चिड में दिखी, जिसमें आयोलाल - झूलेलाल का उद्घोष और सिंधी समाज की प्रसिद्ध डंडेशाही की खनक से स्थानीय निवासी खासे रोमांचित हुए। चेटीचंड पर्व पर मुख्य आयोजन 20 मार्च को है।

कृष्णा आर्चिड के सिंधी परिवारों के सौजन्य से भगवान झूलेलाल की अमर ज्योति सिंधी पंडित मोहनलाल महाराज द्वारा विधिविधान के साथ प्रज्जवलित कराई गई। तदोपरांत '' अमर ज्योत '' की झांकी के साथ सिंधी युवक और युवतियां डंडेशाही का प्रदर्शन करते दिखे। अमर ज्योत का स्थानीय सिंधी परिवारों ने स्वागत व पूजा-अर्चन किया, इसमें अन्य स्थानीय निवासियों ने भी भरपुर उत्साह दिखाया और पुष्प वर्षा कर '' लालसाई की अमर ज्योत '' को नमन किया। इसमें कलाकार चंद्रकांत लालवानी की मंडली के सिंधी भजनों की धूम रही, जिसमें सिंधी नवयुवक और महिलाओं के साथ हर कोई झूम उठा। सिंधी गीतों की ध्वनि वातावरण भक्तिमय कर रही थी। बच्चें और महिलाए हर्षित हो नाचते दिखे।

क्या यही कारण है कि कुछ परिवारों में सभी लड़के होते हैं?

● विजय गर्ग

दुनिया भर के कई परिवारों में, लोग अक्सर एक दिलचस्प पैटर्न देखते हैं। कुछ परिवारों में अधिकतर या सभी लड़के होते हैं, जबकि अन्य में ज्यादातर लड़कियां होती हैं। इस अवलोकन से जिज्ञासा, मिथक और कभी-कभी सांस्कृतिक मान्यताएं भी पैदा हो गई हैं कि ऐसा क्यों होता है। हालाँकि, आधुनिक विज्ञान आनुवंशिकी, संभाव्यता और जीव विज्ञान में निहित स्पष्ट स्पष्टीकरण प्रदान करता है।

लिंग निर्धारण का बुनियादी विज्ञान

बच्चे का लिंग निषेचन के समय निर्धारित किया जाता है। मनुष्य में दो प्रकार के लिंग गुणसूत्र होते हैं: X और Y। महिलाओं में दो एक्स क्रोमोसोम (XX) होते हैं, जबकि पुरुषों में एक एक्स और एक वाई गुणसूत्र (XY) होता है।

प्रजनन के दौरान, माता का अंडा हमेशा एक एक्स गुणसूत्र रखता है, जबकि पिता के शुक्राणु में या तो X या Y गुणसूत्र हो सकता है। यदि एक्स गुणसूत्र युक्त शुक्राणु अंडे को निषेचित करता है, तो बच्चा लड़की (XX) होगा। यदि Y गुणसूत्र युक्त शुक्राणु अंडे को निषेचित करता है, तो बच्चा लड़का (XY) होगा।

इस प्रक्रिया को अक्सर पुनेट वर्ग के नाम से जाने वाले आनुवंशिक विचार का उपयोग करके समझाया जाता है, जो दर्शाता है कि प्रत्येक गर्भावस्था में लड़के या लड़की होने की लगभग 50% संभावना होती है।

कुछ परिवारों में अधिकतर लड़के क्यों होते हैं?

यद्यपि सिद्धांततः संभावना बराबर है, लेकिन वास्तविक जीवन में परिवार कभी-कभी संयोग के कारण पैटर्न प्रदर्शित करते हैं। जिस प्रकार एक सिक्का को कई बार पलटने से सिरों की श्रृंखला बन सकती है, उसी प्रकार एक परिवार में स्वाभाविक रूप से कई लड़के हो सकते हैं।

हालाँकि, आनुवंशिकी और प्रजनन का अध्ययन करने वाले शोधकर्ताओं ने कुछ संभावित कारक प्रस्तावित किए हैं

1। आनुवंशिक प्रवृत्तियाँ

कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि कुछ पुरुष एक्स-वाहक शुक्राणु की तुलना में थोड़ा अधिक वाई-क्रोमोसोम (वाईट) वाहक शुक्राशय उत्पन्न कर सकते हैं। यदि

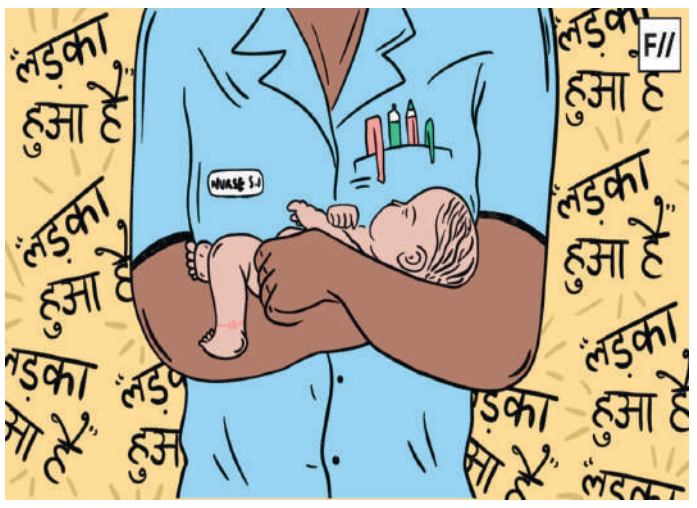

ऐसा होता है, तो उस परिवार में लड़के होने की संभावना बढ़ सकती है।

2। पर्यावरणीय और जैविक कारक

कुछ अध्ययनों से पता चलता है कि माता-पिता की आयु, तनाव का स्तर, पोषण और पर्यावरणीय स्थिति जैसे कारक कुछ शुक्राणु कोशिकाओं के जीवित रहने या सफलता को प्रभावित कर सकते हैं। हालाँकि, ये प्रभाव सामान्यतः छोटे होते हैं और इन्हें पूरी तरह से समझा नहीं जाता।

3। शुद्ध संभावना

कई मामलों में, सबसे सरल स्पष्टीकरण सांख्यिकीय संभावना है। यहां तक कि 5050 की संभावना के बावजूद, परिवारों में एक ही लिंग के कई बच्चे होना पूरी तरह से सामान्य है।

उदाहरण के लिए:

सांख्यिकीय दृष्टि से चार बच्चों वाले परिवार में चार लड़के हो सकते हैं।

एक और परिवार में चार लड़कियां हो सकती हैं।

दोनों परिणाम व्यक्तिगत रूप से दुर्लभ हैं, लेकिन बड़ी आबादी में नियमित रूप से होते हैं।

सांस्कृतिक विश्वास और गलत धारणाएं

कुछ समाजों में, लोगों ने आहार, समय या पारंपरिक प्रथाओं के माध्यम से बच्चे के लिंग को नियंत्रित करने के बारे में मिथक विकसित किए हैं। हालांकि, वैज्ञानिक साक्ष्य बताते हैं कि कोई भी विश्वसनीय प्राकृतिक विधि बच्चे के लिंग की गारंटी नहीं दे सकती।

यह भी याद रखना महत्वपूर्ण है कि लड़के और लड़कियां दोनों समान रूप से मूल्यवान हैं। आधुनिक समाज लैंगिक समानता पर जोर देते हैं तथा लिंग के आधार पर प्राथमिकताओं को हतोत्साहित करते हैं।

विज्ञान अभी भी क्या अध्ययन करता है

वैज्ञानिक इस बात का अध्ययन कर रहे हैं कि आनुवंशिकी, विकास और पर्यावरणीय कारक जन्म पैटर्न को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। कुछ शोध में यह भी पता लगाया गया है कि क्या कुछ पारिवारिक पंथों में कई पीढ़ियों के दौरान एक लिंग के प्रति थोड़ी प्रवृत्ति होती है।

हालाँकि, समग्र मानव जनसंख्या उल्लेखनीय रूप से संतुलित बनी हुई है, दुनिया भर में हर 100 लड़कियों के लिए लगभग 105 लड़के पैदा होते हैं।

निष्कर्ष

कुछ परिवारों में केवल लड़के ही होने का कारण आमतौर पर कोई विशेष नियम या गुप्त विधि नहीं होता। यह मुख्यतः आनुवंशिकी और सरल संभावना का परिणाम है। प्रत्येक गर्भावस्था एक स्वतंत्र घटना होती है जिसमें लड़का या लड़की होने की लगभग समान संभावनाएं होती हैं।

लिंग निर्धारण के पीछे के विज्ञान को समझने से मिथकों को दूर करने में मदद मिलती है और हमें याद दिलाता है कि हर बच्चा लड़का या लड़की एक कीमती उपहार है।

सभी के लिए शिक्षा : डॉ विजय गर्ग

शिक्षा एक प्रगतिशील और न्यायपूर्ण समाज की नींव है। यह वह कुंजी है जो ज्ञान, अवसर और व्यक्तिगत विकास का द्वार खोलती है। सभी के लिए शिक्षा का विचार इस बात पर जोर देता है कि प्रत्येक बच्चे, युवा और वयस्क को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच होनी चाहिए, चाहे उनकी सामाजिक, आर्थिक या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो। आज की तेजी से बदलती दुनिया में, सभी के लिए शिक्षा सुनिश्चित करना न केवल एक नैतिक जिम्मेदारी है बल्कि सतत विकास के लिए भी एक आवश्यकता है।

शिक्षा का महत्व

शिक्षा व्यक्तियों और समाजों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह लोगों को आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और समस्या-समाधान की क्षमता विकसित करने में मदद करता है। एक शिक्षित व्यक्ति सूचित निर्णय ले सकता है, आर्थिक विकास में योगदान दे सकता है, तथा लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग ले सकता है।

शिक्षा सामाजिक समानता को भी बढ़ावा देती है। जब अलग-अलग पृष्ठभूमि के लोगों को समान शैक्षिक अवसर प्राप्त होते हैं, तो अमीर और गरीब के बीच का अंतर धीरे-धीरे कम हो सकता है। यह व्यक्तियों को गरीबी से उबरने के लिए सशक्त बनाता है और उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार करता है।

शिक्षा एक मौलिक अधिकार के रूप में

इसके महत्व को समझते हुए कई देशों ने शिक्षा को एक मौलिक अधिकार बना दिया है। भारत में, निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का बच्चों का अधिकार अधिनियम यह सुनिश्चित करता है कि 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा मिले। यह कानून 86वें संवैधानिक संशोधन अधिनियम के बाद बनाया गया था, जिसने संविधान के अनुच्छेद 21ए के तहत शिक्षा को एक मौलिक अधिकार बना दिया।

वैश्विक स्तर पर, यूनेस्को जैसे संगठन सार्वभौमिक शिक्षा की दृढ़ता से वकालत करते हैं और उन्होंने दुनिया भर में साक्षरता और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई कार्यक्रम शुरू किए हैं।

सभी के लिए शिक्षा प्राप्त करने की चुनौतियां

महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद, कई चुनौतियां अभी भी शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच को रोकती हैं।

गरीबी सबसे बड़ी बाधाओं में से एक बनी हुई है। कई परिवार स्कूल की सामग्री, वर्दी या परिवहन का खर्च नहीं उठा सकते। परिणामस्वरूप, बच्चे अक्सर अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए स्कूल छोड़ देते हैं।

बुनियादी ढांचे की कमी एक अन्य समस्या है, विशेष रूप से ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में। कई स्कूलों में कक्षाओं, शिक्षकों और शिक्षण सामग्री की कमी है।

विश्व के कई हिस्सों में लैंगिक असमानता शिक्षा को भी प्रभावित करती है। कुछ समुदायों में, सामाजिक परंपराओं और प्रारंभिक विवाह के कारण लड़कियों को स्कूल जाने से हतोत्साहित किया जाता है।

डिजिटल विभाजन एक नई चुनौती के रूप में उभर आया है। महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा आम हो गई, लेकिन इंटरनेट या डिजिटल उपकरणों से वंचित लाखों छात्र पीछे रह गए।

शिक्षकों और समाज की भूमिका

सभी के लिए शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने में शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक समर्पित शिक्षक छात्रों में जिज्ञासा, आत्मविश्वास और आजीवन सीखने की प्रेरणा दे सकता है। शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए उचित शिक्षक प्रशिक्षण, उचित वेतन और सहायक कार्य स्थितियां आवश्यक हैं।

समाज की सामूहिक जिम्मेदारी भी है। माता-पिता, समुदाय और सरकारों को एक ऐसा वातावरण बनाने के लिए मिलकर काम करना चाहिए जहां शिक्षा का महत्व दिया जाए और उसे प्रोत्साहित किया जाए।

आगे का रास्ता

सभी के लिए शिक्षा प्राप्त करने के लिए, सरकारों को स्कूलों, शिक्षक प्रशिक्षण और शैक्षिक प्रौद्योगिकी में अधिक निवेश करना होगा। नीतियों को न केवल नामांकन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए बल्कि सीखने की गुणवत्ता में सुधार करने पर भी ध्यान देना चाहिए। ग्रामीण बच्चों, लड़कियों और विकलांग बच्चों जैसे हाशिए पर पड़े समूहों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रम सामाजिक दृष्टिकोण को बदलने में मदद कर सकते हैं जो बच्चों को स्कूल जाने से रोकते हैं। छात्रवृत्ति, मध्याह्न भोजन योजनाएं और निःशुल्क शैक्षिक सामग्री भी परिवारों को अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रोत्साहित कर सकती हैं।

निष्कर्ष

शिक्षा जीवन को बदलने और बेहतर भविष्य के निर्माण का सबसे शक्तिशाली साधन है। सभी के लिए शिक्षा का दृष्टिकोण सिर्फ कक्षाओं और पाठ्यपुस्तकों से संबंधित नहीं है; यह प्रत्येक व्यक्ति को सीखने और आगे बढ़ने के समान अवसर पैदा करने के बारे में है। जब हर बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलती है, तो समाज अधिक प्रबुद्ध, समृद्ध और शांतिपूर्ण हो जाता है। इसलिए, सभी के लिए शिक्षा सुनिश्चित करना दुनिया भर की सरकारों, संस्थानों और नागरिकों के लिए प्राथमिकता बनी रहेगी।

परमाणु प्रसार को रोकने की जंग या उसे तेज करने की भूल?

(पश्चिम एशिया की समकालीन परिस्थितियों में यह प्रश्न कि क्या परमाणु प्रसार को रोकने के लिए किए गए सैन्य हस्तक्षेप वास्तव में उसे और अधिक तीव्र बना देते हैं।)

— डॉ. सत्यवान सौरभ

परमाणु हथियारों का प्रसार आधुनिक अंतरराष्ट्रीय राजनीति की सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक है।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से वैश्विक व्यवस्था का एक प्रमुख उद्देश्य यह रहा है कि परमाणु हथियारों का विस्तार सीमित रखा जाए और नए देशों को इस श्रेणी में प्रवेश करने से रोका जाए। इसी उद्देश्य से अनेक अंतरराष्ट्रीय संधियाँ, निगरानी तंत्र और कूटनीतिक पहलें अस्तित्व में आईं। इसके बावजूद समय-समय पर यह विचार सामने आता रहा है कि यदि किसी देश के परमाणु कार्यक्रम से वैश्विक या क्षेत्रीय सुरक्षा को खतरा उत्पन्न हो रहा हो, तो उसे रोकने के लिए निवारक या पूर्व-emptive युद्ध का सहारा लिया जा सकता है। परंतु आलोचकों का तर्क है कि इस प्रकार के सैन्य हस्तक्षेप कई बार उस समस्या को हल करने के बजाय और जटिल बना देते हैं, क्योंकि वे अन्य देशों को भी परमाणु हथियार हासिल करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। पश्चिम एशिया में हाल के दशकों की घटनाएँ इस बहस को और अधिक प्रासंगिक बनाती हैं।

निवारक युद्ध की अवधारणा इस विचार पर आधारित है कि संभावित खतरे को उसके पूर्ण रूप लेने से पहले ही समाप्त कर दिया जाए। यदि किसी देश के पास परमाणु हथियार बनने की क्षमता विकसित हो रही है, तो कुछ शक्तियाँ यह मान सकती हैं कि सैन्य कार्रवाई करके उस कार्यक्रम को नष्ट कर देना ही सबसे सुरक्षित विकल्प है। इस रणनीति का तर्क यह है कि यदि खतरे को प्रारंभिक चरण में ही समाप्त कर दिया जाए, तो भविष्य में बड़े युद्ध या विनाश से बचा जा सकता है। परंतु व्यवहार में यह नीति कई बार अपेक्षित परिणाम नहीं दे पाती।

पश्चिम एशिया इस संदर्भ में अत्यंत संवेदनशील क्षेत्र है। यहाँ लंबे समय से भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, धार्मिक-सांप्रदायिक तनाव, ऊर्जा संसाधनों पर नियंत्रण और बाहरी शक्तियों के हस्तक्षेप जैसे अनेक कारक मौजूद हैं। इस क्षेत्र में परमाणु हथियारों की संभावना को लेकर लगातार चिंता बनी रही है। कुछ देशों के परमाणु कार्यक्रमों को लेकर अंतरराष्ट्रीय समुदाय में संदेह और बहस दोनों रहे हैं। ऐसे माहौल में निवारक युद्ध या सैन्य कार्रवाई का विचार अक्सर चर्चा में आता है।

इतिहास में ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहाँ संभावित परमाणु खतरे को रोकने के लिए सैन्य कार्रवाई की गई। इन कार्रवाइयों का उद्देश्य यह था कि संबंधित देश के परमाणु बुनियादी ढाँचे को नष्ट करके उसे हथियार विकसित करने से रोका जाए। प्रारंभिक दृष्टि में यह रणनीति प्रभावी प्रतीत हो सकती है, क्योंकि इससे परमाणु कार्यक्रम को तत्काल नुकसान पहुँचता है। लेकिन दीर्घकालिक प्रभावों को देखें तो स्थिति अधिक जटिल दिखाई देती है।

पहला महत्वपूर्ण पहलू यह है कि निवारक युद्ध किसी देश में असुरक्षा और अविश्वास की भावना को बढ़ा सकता है। यदि किसी राज्य को यह लगता है कि उसकी संप्रभुता और सुरक्षा को बाहरी शक्तियों से लगातार खतरा है, तो वह अपनी रक्षा को मजबूत करने के लिए अधिक आक्रामक कदम उठा सकता है। ऐसे में परमाणु हथियारों को "अंतिम सुरक्षा गारंटी" के रूप में देखा जाने लगता है। परिणामस्वरूप वह देश अपने परमाणु कार्यक्रम को और अधिक गुप्त तथा तेज गति से आगे बढ़ाने की कोशिश कर सकता है।

दूसरा पहलू क्षेत्रीय सुरक्षा संतुलन से जुड़ा है। पश्चिम एशिया में कई देश एक-दूसरे के प्रति अविश्वास और प्रतिस्पर्धा की भावना रखते हैं। यदि किसी देश के खिलाफ निवारक सैन्य कार्रवाई होती है, तो अन्य देशों को भी यह आशंका हो सकती है कि भविष्य में उनके साथ भी ऐसा हो सकता है। इससे वे अपनी सुरक्षा नीति में परमाणु विकल्प को अधिक गंभीरता से लेने लगते हैं। इस प्रकार एक देश के खिलाफ की गई कार्रवाई पूरे क्षेत्र में परमाणु प्रसार की दौड़ को तेज कर सकती है।

तीसरा महत्वपूर्ण पहलू अंतरराष्ट्रीय कानून और वैश्विक व्यवस्था से संबंधित है। निवारक युद्ध अक्सर विवादास्पद होता है, क्योंकि इसमें संभावित खतरे के आधार पर सैन्य कार्रवाई की जाती है, जबकि खतरा अभी पूरी तरह वास्तविक नहीं होता। यदि शक्तिशाली देश इस सिद्धांत को बार-बार लागू करते हैं, तो यह अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में अस्थिरता पैदा कर सकता है। अन्य देश भी अपने सुरक्षा हितों के नाम पर इसी प्रकार की कार्रवाइयों को उचित ठहराने लग सकते हैं। इससे वैश्विक स्तर पर संघर्ष और अविश्वास बढ़ सकता है।

पश्चिम एशिया की समकालीन परिस्थितियों में यह बहस और भी जटिल हो जाती है। क्षेत्र में कई ऐसे देश हैं जो सुरक्षा चुनौतियों, क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा और बाहरी हस्तक्षेपों से घिरे हुए हैं। कुछ देशों के परमाणु कार्यक्रमों को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गहन निगरानी और कूटनीतिक प्रयास चल रहे हैं। लेकिन समय-समय पर यह आशंका भी व्यक्त की जाती है कि यदि कूटनीति विफल हो जाती है, तो सैन्य विकल्प अपनाया जा सकता है। यही वह स्थिति है जहाँ यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या निवारक युद्ध वास्तव में समस्या का समाधान है।

आलोचकों का कहना है कि सैन्य कार्रवाई अक्सर अल्पकालिक समाधान देती है, जबकि दीर्घकाल में वह समस्या को और गहरा कर सकती है। जब किसी देश के परमाणु प्रतिष्ठानों पर हमला होता है, तो इससे राष्ट्रीय गौरव और सुरक्षा की भावना को चोट पहुँचती है। इससे उस देश की जनता और राजनीतिक नेतृत्व में यह विश्वास मजबूत हो सकता है कि परमाणु हथियार ही बाहरी दबाव से बचने का सबसे प्रभावी साधन हैं। इस प्रकार निवारक युद्ध उस उद्देश्य के विपरीत परिणाम दे सकता है, जिसके लिए उसे किया गया था।

इसके अलावा, आधुनिक समय में परमाणु कार्यक्रम केवल एक या दो स्थलों तक सीमित नहीं होते। वे कई संस्थानों, वैज्ञानिकों और तकनीकी क्षमताओं के व्यापक नेटवर्क पर आधारित होते हैं। इसलिए किसी एक प्रतिष्ठान को नष्ट करने से पूरे कार्यक्रम को समाप्त करना संभव नहीं होता। अक्सर ऐसा होता है कि हमले के बाद संबंधित देश अपने कार्यक्रम को और अधिक सुरक्षित तथा गुप्त रूप से विकसित करने लगता है। इससे अंतरराष्ट्रीय निगरानी और नियंत्रण और कठिन हो जाते हैं।

हालाँकि यह भी सत्य है कि कुछ परिस्थितियों में निवारक कार्रवाई को सुरक्षा के दृष्टिकोण से आवश्यक माना जाता है। यदि किसी राज्य के पास परमाणु हथियार बनने की क्षमता अत्यंत निकट हो और वह क्षेत्रीय या वैश्विक स्थिरता के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न कर रहा हो, तो कुछ देश यह तर्क दे सकते हैं कि सैन्य हस्तक्षेप अपरिहार्य है। लेकिन इस प्रकार की कार्रवाई को अंतिम विकल्प के रूप में ही देखा जाना चाहिए, क्योंकि इसके परिणाम व्यापक और अनिश्चित हो सकते हैं।

इस संदर्भ में कूटनीति, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और बहुपक्षीय संस्थाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। परमाणु प्रसार को रोकने के लिए केवल सैन्य शक्ति पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है। विश्वास निर्माण, पारदर्शिता, निरीक्षण तंत्र और आर्थिक-राजनीतिक प्रोत्साहनों के माध्यम से भी देशों को परमाणु हथियारों की दौड़ से दूर रखा जा सकता है। पश्चिम एशिया जैसे संवेदनशील क्षेत्र में यह दृष्टिकोण विशेष रूप से आवश्यक है, क्योंकि यहाँ किसी भी सैन्य टकराव के व्यापक क्षेत्रीय और वैश्विक परिणाम हो सकते हैं।

इसके साथ ही यह भी महत्वपूर्ण है कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय परमाणु निरस्त्रीकरण की दिशा में भी गंभीर प्रयास करे। यदि केवल कुछ देशों के पास परमाणु हथियार बने रहें और अन्य देशों को उनसे दूर रहने के लिए कहा जाए, तो यह व्यवस्था लंबे समय तक टिकाऊ नहीं रह सकती। वैश्विक स्तर पर समान और न्यायसंगत सुरक्षा व्यवस्था ही परमाणु प्रसार को प्रभावी ढंग से रोक सकती है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि निवारक युद्ध की रणनीति परमाणु प्रसार को रोकने का एक विवादास्पद और जोखिमपूर्ण तरीका है। पश्चिम एशिया की समकालीन परिस्थितियाँ यह संकेत देती हैं कि सैन्य हस्तक्षेप कई बार समस्या को हल करने के बजाय उसे और जटिल बना देता है। इससे क्षेत्रीय असुरक्षा बढ़ सकती है, अविश्वास गहरा सकता है और अन्य देशों को भी परमाणु हथियार विकसित करने की प्रेरणा मिल सकती है। इसलिए परमाणु प्रसार की चुनौती से निपटने के लिए दीर्घकालिक और बहुआयामी रणनीति की आवश्यकता है, जिसमें कूटनीति, सहयोग और वैश्विक संस्थागत ढाँचे की केंद्रीय भूमिका हो।

यदि अंतरराष्ट्रीय समुदाय स्थायी शांति और सुरक्षा की दिशा में गंभीर है, तो उसे यह समझना होगा कि परमाणु प्रसार जैसी जटिल समस्या का समाधान केवल सैन्य शक्ति से नहीं बल्कि संवाद, विश्वास और न्यायसंगत वैश्विक व्यवस्था से ही संभव है।

डिजिटल दौर में हिंदी पत्रकारिता की नई चुनौतियां

बाबूलाल नागा

डिजिटल तकनीक ने हिंदी पत्रकारिता को अभूतपूर्व विस्तार दिया है। मोबाइल फोन और इंटरनेट ने खबरों को उन लोगों तक पहुंचाया है, जो कभी मुख्यधारा के मीडिया से बाहर थे। छोटे कस्बों, गांवों और हाशिए पर खड़े समाज की आवाज आज राष्ट्रीय बहस का हिस्सा बन रही है। यह हिंदी पत्रकारिता की ऐतिहासिक उपलब्धि है। लेकिन इसी डिजिटल विस्तार के साथ हिंदी पत्रकारिता ऐसी चुनौतियों से भी जूझ रही है, जो उसकी विश्वसनीयता, भाषा और लोकतांत्रिक भूमिका पर गंभीर प्रश्न खड़े करती हैं।

डिजिटल दौर की सबसे बड़ी विशेषता है गति। खबर अब मिनटों और सेकंडों में फैलती है। इसी तेजी ने पत्रकारिता को एक ऐसी दौड़ में धकेल दिया है, जहां सबसे पहले खबर देने की होड़ में सत्यापन, संदर्भ और संतुलन कई बार पीछे छूट जाते हैं। अधूरी सूचनाएं, अनुमान पर आधारित निष्कर्ष और जल्दबाजी में लिखी गई रिपोर्टें पाठक को सच के बजाय भ्रम की ओर ले जाती हैं। पत्रकारिता, जिसका मूल उद्देश्य सत्य तक पहुंचना था, अब कई बार केवल समय से पहले पहुंचने तक सीमित होती दिखाई देती है।

डिजिटल प्लेटफॉर्म पर पत्रकारिता का मूल्यांकन अब खबर की गंभीरता से नहीं, बल्कि उसके क्लिक और व्यू से होने लगा है। इसका सीधा असर कंटेंट की प्रकृति पर पड़ा है। सनसनीखेज शीर्षक, उत्तेजक भाषा और भावनाओं को भड़काने वाली प्रस्तुतियां अधिक प्राथमिकता पा रही हैं। गंभीर सामाजिक, आर्थिक और संवैधानिक मुद्दे अक्सर हाशिए पर चले जाते हैं। हिंदी पत्रकारिता का यह स्वरूप जनचेतना के निर्माण के बजाय जनभावनाओं के दोहन का माध्यम बनता जा रहा है, जो लोकतंत्र के लिए खतरनाक संकेत है।

इस पूरी प्रक्रिया में हिंदी भाषा की गुणवत्ता भी प्रभावित हुई है। डिजिटल मीडिया की हड़बड़ी में भाषा की शुद्धता, सहजता और संवेदनशीलता पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जा रहा। वर्तनी और व्याकरण की गलतियां, अनावश्यक अंग्रेजी मिश्रण और भ्रामक शब्दावली आम होती जा रही है। हिंदी पत्रकारिता की सबसे बड़ी ताकत उसकी जनभाषा रही है। यदि भाषा ही कमजोर होगी, तो विचार और विमर्श भी कमजोर पड़ेंगे।

डिजिटल दौर में अफवाह और फेक न्यूज का संकट हिंदी पत्रकारिता के सामने सबसे बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। सोशल मीडिया पर बिना स्रोत और बिना पुष्टि खबरें इतनी तेजी से फैलती हैं कि सच उनके पीछे छूट जाता है। कई बार पत्रकारिता भी इस बहाव में बह जाती है। इससे न केवल समाज में भ्रम और तनाव बढ़ता है, बल्कि मीडिया की साख पर भी गहरा आघात पहुंचता है। ऐसे समय में

तथ्य-जांच और जिम्मेदार रिपोर्टिंग पत्रकारिता की नैतिकता का नहीं, बल्कि अस्तित्व का प्रश्न बन चुकी है।

डिजिटल मीडिया पर कॉरपोरेट और राजनीतिक दबाव भी बढ़ा है। विज्ञापन और प्रायोजन पर निर्भरता ने कई बार संपादकीय स्वतंत्रता को सीमित किया है। खबरों का चयन और प्रस्तुति आर्थिक और सत्ता के समीकरणों से प्रभावित होने लगी है। आलोचनात्मक और जनपक्षधर पत्रकारिता की जगह अनुकूल और सुरक्षित पत्रकारिता का बढ़ना लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को कमजोर करता है।

एक नई चुनौती सोशल मीडिया एल्गोरिद्म का अदृश्य नियंत्रण है। आज यह एल्गोरिद्म तय करता है कि कौन-सी खबर लोगों तक पहुंचेगी और कौन-सी नहीं। गंभीर, शोधपरक और जनहित से जुड़ी खबरें अक्सर पीछे रह जाती हैं, जबकि हल्की और उत्तेजक सामग्री अधिक प्रसारित होती है। इससे पत्रकारिता की दिशा संपादकीय विवेक के बजाय तकनीकी गणनाओं से तय होने लगी है।

डिजिटल दौर में हिंदी पत्रकारों की स्वतंत्रता और सुरक्षा भी गंभीर चिंता का विषय है। ऑनलाइन ट्रोलिंग, धमकियां और चरित्र हनन जैसी घटनाएं आम होती जा रही हैं। भय और दबाव के इस माहौल में निर्भीक पत्रकारिता करना आसान नहीं रह गया है। इसके साथ ही सीमित संसाधन, कम वेतन और बहु-भूमिकाओं का बोझ पत्रकारों की पेशेवर क्षमता को प्रभावित करता है।

इन तमाम चुनौतियों के बावजूद डिजिटल दौर हिंदी पत्रकारिता के लिए संभावनाओं से खाली नहीं है। यदि हिंदी पत्रकारिता अपनी भाषा की गरिमा बनाए रखे, सत्यापन और संतुलन को सर्वोच्च प्राथमिकता दे, सामाजिक न्याय और जनपक्षधरता को अपने केंद्र में रखे, और तकनीक को साधन मानकर उपयोग करे तो यह दौर उसके लिए नए सशक्तिकरण का माध्यम बन सकता है।

अंततः यह समझना आवश्यक है कि डिजिटल तकनीक पत्रकारिता का विकल्प नहीं बल्कि माध्यम है। हिंदी पत्रकारिता का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि वह किसके पक्ष में खड़ी है। यदि वह जनता की भाषा में जनता की सच्ची चिंता को स्वर देती रही, सत्ता से सवाल पूछती रही और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करती रही, तो डिजिटल दौर उसकी पहचान को कमजोर नहीं बल्कि और मजबूत करेगा।

अत्यन्त प्राचीन और गौरवशाली परंपराएं हैं पुष्टि मार्ग संप्रदाय की : डॉ. वागीश कुमार महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

मथुरा। विश्वविख्यात द्वारकाधीश मन्दिर में श्रीराजाधिराज मंदिर एवं षष्ठीपूर्ति महोत्सव कमेटी, मथुरा के संयुक्त तत्वावधान में चल रहे अनंत विभूषित जगद्गुर श्रीमद् वल्लभाचार्य शुद्धाद्वैत तृतीय पीठाधीश्वर परम पूज्य गोस्वामी 108 डॉक्टर वागीश कुमार महाराज की षष्ठीपूर्ति (60वां अवतरण दिवस) के उपलक्ष्य में त्रि-दिवसीय महामनोरथ समारोह के तीसरे दिन पूज्य महाराजश्री द्वारा यमुना तट पर 1100 कमल पुष्पों से श्रीयमुना महारानी का वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य अर्चन एवं चुनरी मनोरथ किया गया।इसके अलावा सायं काल द्वारकाधीश मन्दिर में ठाकुरश्री राजाधिराज को विशाल छप्पन भोग निवेदित किए गए।साथ ही पद गायन एवं संकीर्तन आदि के कार्यक्रम सम्पन्न हुए।इससे पूर्व ग्वाल के दर्शन, नंद महोत्सव, सोने के पलना एवं राजभोग दर्शन के साथ-साथ

द्वारकाधीश प्रभु का भव्य कुंनवारा मनोरथ तथा फूल फाग की होली के दर्शन हुए।

इस अवसर पर समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं को अपने आशीर्वचन देते हुए कांकरोली नरेश, तृतीय पीठाधीश्वर परम पूज्य गोस्वामी 108 डॉक्टर वागीश कुमार महाराज ने कहा कि पुष्टि मार्ग संप्रदाय की परंपराएं अत्यन्त प्राचीन और गौरवशाली हैं।जिनकी स्थापना 16 वीं शताब्दी में स्वामी महाप्रभु वल्लभाचार्य ने की थी।इसीलिए इसे वल्लभ कुल भी कहा जाता है।यह श्रुद्धाद्वैतश्र दर्शन का पालन करता है, जहाँ ईश्वर की कृपा (पुष्टि) के माध्यम से मोक्ष से अधिक भगवान के सान्निध्य का आनंद

(सेवा) मुख्य माना जाता है।

कार्यक्रम में प्रख्यात साहित्यकार श्यूपी रत्नश्र डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, महोत्सव के संयोजक डॉ. सहदेव कृष्ण चतुर्वेदी एवं सह-संयोजक व मीडिया प्रभारी राकेश तिवारी, एडवोकेट, द्वारकाधीश मन्दिर, मथुरा के अधिकारी वैद्य अशोक कुमार शर्मा, सहायक अधिकारी सत्यनारायण शर्मा, समाधानीश्री ब्रजेश चतुर्वेदी, डॉक्टर मनोज मोहन शास्त्री, सचिन चतुर्वेदी, समाधानीश्री राजुभाई चतुर्वेदी, डॉ. राधाकांत शर्मा, नरेंद्र भाई शाह (नेहरू भाई), शुभमभाई शाह, ध्रुवभाई शाह, मुकेश भाई परिख, प्रकाश भाई पटेल, मुकेश भाई मेहता आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

गौ सेवा ही सच्चा धर्म, चारों धाम के समान पुण्य : डॉ. शंभू पंवार

नई दिल्ली, 17 मार्च। सनातन संस्कृति में गौ सेवा को सर्वोच्च धर्म और महान पुण्य का कार्य माना गया है। गौ माता में 33 कोटि देवी-देवताओं का वास माना जाता है, इसलिए उनकी सेवा करना भगवान की उपासना के समान फलदायी है।

ये प्रेरक विचार वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर, अंतरराष्ट्रीय लेखक, पत्रकार एवं साहित्यकार डॉ. शंभू पंवार ने चिड़ावा स्थित श्री कृष्ण गौशाला में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि श्रद्धा और विश्वास के साथ की गई गौ सेवा न केवल जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है, बल्कि घर-परिवार में सुख, शांति और समृद्धि का मार्ग भी प्रशस्त करती है। डॉ. पंवार ने अपनी माताश्री स्वर्गीय श्रीमती शांति देवी पंवार की पुण्यतिथि पर हर वर्ष की भांति गौशाला पहुंचकर गौ माताओं को दलिया खिलाया और सेवा कर उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर वातावरण सेवा, संवेदना और संस्कार की भावना

से ओतप्रोत रहा। इस पुण्य कार्य में विजय पंवार, सुभाष पंवार, अभिषेक पंवार, अंकित पंवार, यशस्वी एवं कान्हा ने भी सक्रिय सहभागिता निभाते हुए गौ माताओं को आहार खिलाया।उल्लेखनीय है कि डॉ. शंभू पंवार अपने परिवार के जन्मदिवसों एवं माता- पिता की पुण्यतिथियों पर नियमित रूप से गौशाला में सेवा कार्य कर चारा, दलिया, गुड़ आदि अर्पित करते हुए समाज में सेवा, संस्कार और समर्पण की प्रेरणा दे रहे हैं।

संयम, संकल्प और निरंतरता ही वे चाबियाँ हैं जो प्रगति के द्वार खोलती हैं

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह

जीवन में अनुशासन और समय का महत्व एक ऐसा विषय है जिस पर जितना विचार किया जाए उतना कम है क्योंकि सफ़लता की नींव इन्हीं दो स्तंभों पर टिकी होती है और जो व्यक्ति समय की क़द्र नहीं करता समय उसे पीछे छोड़ देता है, जबकि अनुशासन हमें वह शक्ति प्रदान करता है जिससे हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास कर सकते हैं। असल में प्रकृति भी हमें निरंतर यही सिखाती है कि हर कार्य का एक निश्चित समय होता है जैसे सूर्य का उदय होना और ऋतुओं का बदलना हमें यह संदेश देता है कि व्यवस्था ही ब्रह्मांड का नियम है और जब हम अपने जीवन में इस नियम को उतारते हैं तो हमारी कार्यक्षमता कई गुना बढ़ जाती है। अक्सर लोग सोचते हैं कि अनुशासन का अर्थ केवल कड़े नियमों का पालन करना है लेकिन वास्तविकता यह है कि अनुशासन हमें वह स्वतंत्रता देता है जिससे हम अपने मन के भटकाव को रोककर अपनी ऊर्जा को सही दिशा में प्रवाहित कर सकें क्योंकि बिना उद्देश्य के मेहनत केवल थकान लाती है जबकि अनुशासित मेहनत परिणाम लाती है। वर्तमान समय में तकनीक और विलासिता के साधनों ने हमें थोड़ा आलसी बना दिया है जिससे हम अक्सर कार्यों को कल पर टालने की प्रवृत्ति विकसित कर लेते हैं परंतु यह समझना आवश्यक है कि बीता हुआ पल कभी वापस नहीं आता और यही वह क्षण है जिसे हम बेहतर बना सकते हैं। एक विद्यार्थी के जीवन में तो अनुशासन का महत्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि यही वह समय होता है जब चरित्र का निर्माण होता है, और अच्छी आदतें भविष्य की सफ़लता का मार्ग प्रशस्त करती हैं। अंततः यह कहा जा सकता है कि संयम, संकल्प और निरंतरता ही वे चाबियाँ हैं जो प्रगति के द्वार खोलती हैं और जो व्यक्ति अपनी आदतों पर विजय पा लेता है वह पूरी दुनिया पर विजय पाने की क्षमता रखता है, क्योंकि स्वयं पर नियंत्रण ही सबसे बड़ी जीत है और यही जीवन का असली सार है।

प्रभुशरण तिवाड़ी के 'श्रीमद भागवत मंगलपाठ' का भव्य विमोचन

डॉ. शंभु पंवार

नई दिल्ली, 17 मार्च। कॉलेज रोड स्थित पोद्दार पार्क के परमहंस पीठ सनातन आश्रम चिड़ावा में बावलियां बाबा की प्रतिमा के सान्निध्य में आयोजित एक भव्य एवं गरिमामय समारोह में वाणी भूषण प्रभुशरण तिवाड़ी द्वारा रचित 'श्रीमद भागवत मंगलपाठ' का विधिवत विमोचन अतिथियों के कर कमलों द्वारा किया गया। समारोह का वातावरण भक्ति, श्रद्धा और आध्यात्मिक ऊर्जा से ओत-प्रोत रहा। इस अवसर पर लेखक प्रभुशरण तिवाड़ी ने अपने उद्बोधन में बताया कि 136 पृष्ठों में संकलित यह ग्रंथ सात अध्यायों में विभाजित है, जिसमें चौपाई, दोहा, सौरठा, छंद, स्तुति और गीतों के माध्यम से श्रीमद्भागवत का सार अत्यंत सरल एवं सहज भाषा में प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने विशेष रूप से कहा कि जो श्रद्धालु भागवत सप्ताह का आयोजन नहीं कर पाते, वे इस मंगलपाठ के माध्यम से एक ही दिन में संपूर्ण भागवत का पाठ कर आध्यात्मिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। विमोचन समारोह में उपस्थित विद्वानों एवं अतिथियों ने इस कृति को जनसामान्य के लिए अत्यंत उपयोगी और धर्मप्रचार में सहायक बताते हुए इसकी सराहना की। लोकार्पण

कार्यक्रम में वैद्य जनार्दन शर्मा, प्रवासी उद्योगपति हुकमीचंद लाम्बीवाला, वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर, प्रख्यात लेखक, पत्रकार डॉ.शंभु पंवार, शिक्षाविद हीरालाल शर्मा, (खाजपुर), डॉ. एल.के. शर्मा, देवदत्त शर्मा, रामनिवास जांगिड़, अशोक सुरोलिया, पूर्व पार्षद शिवलाल सैनी, कैप्टन शंकरलाल महरानिया, कांतिप्रसाद हलवाई, कवि नगेंद्र शास्त्री, बालकृष्ण चौरासिया, गिरधर गोपाल महमिया, डॉ. अशोक शर्मा (अरडावतिया) रजनीकांत मिश्रा, सुरेश शेखावत, तेजप्रकाश सोनी, मनीष शर्मा, महेंद्र रणवा, मातादीन महर्षि, रत्तीराम जांगिड़, (अरडावतिया) सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

अमित शाह का पंजाब से नशों व अपराध के खात्मे का बयान पंजाब के खुशहाल भविष्य का बिगुल : खन्ना

कहा, पंजाब में अमन शांति और कानून व्यवस्था की बहाली के लिए भाजपा सरकार जरूरी

संगरूर, 17 मार्च (जगसीर लोगोंवाल) - पूर्व सांसद अविनाश राय खन्ना ने कहा कि भाजपा की मोगा रैली में देश के गृह मंत्री अमित शाह ने जो पंजाब को अपराध व नशों से मुक्त करने का बयान दिया है वह एक बयान नहीं बल्कि पंजाब के खुशहाल भविष्य का एक बिगुल है । खन्ना ने कहा कि पंजाब से अपराध एवं नशों के खात्मे , अमन शान्ति की बहाली, मजबूत कानून व्यवस्था और प्रदेश के चहुमुखी विकास के लिए पंजाब में आगामी विधानसभा चुनावों में भाजपा की सरकार बनना अति आवश्यक है । खन्ना ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मजबूत नेतृत्व में देश सुरक्षा और विकास के पहलुओं पर तो मजबूत हुआ ही है, साथ ही साथ देश विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था बनकर उभरा है । उत्तर प्रदेश राज्य जो कभी अपराध के क्षेत्र में उच्च ग्राफ का राज्य था वहां भाजपा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के राज में अपराध का ग्राफ शून्य हो चूका है । छत्तीसगढ़ राज्य में भी गृह मंत्री अमित शाह ने नक्सलवाद का खात्मा करने की घोषणा की थी जो कि उस समय असंभव प्रतीत हो रहा था परन्तु छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार आने के पश्चात अब नक्सलवाद काफी हद तक ख़तम हो चूका है और आने वाले समय में नक्सलवाद का पूरी तरह सफाया हो जायेगा। पंजाब के पडोसी राज्य हरियाणा में भी भाजपा की सरकार आने के

पश्चात सबसे पहले लोगों से किये हुए वादों को पूरा किया गया जिसके तहत जहाँ पंजाब की महिलाएं अभी तक 1000-1500 प्रतिमाह का इंतज़ार कर रही हैं वहीँ हरियाणा की सभी महिलाओं को 2100 रुपये प्रतिमाह सरकार बनते ही मिलने शुरू हो गए। खन्ना ने पंजाब की जनता से अपील की कि मोगा रैली में देश के गृह मंत्री द्वारा की गयी घोषणाओं को भाजपा पंजाब में सरकार बनने पर तुरंत लागू करेगी । इसके इलावा भी पंजाबवासियों को केंद्र की लाभकारी योजनाओ जो पंजाब की भगवंत मान सरकार ने अपने स्वार्थ वश रोक रखीं हैं, का सीधा लाभ प्राप्त होगा। खन्ना ने पंजाब की जनता से अपील की की आने वाले वर्ष 2027 के विधानसभा चुनावों में भाजपा को बहुमत से जीतकर पंजाब के उज्जवल भविष्य के लिए अपना सहयोग दें।

श्री कृष्णा गौशाला होसुर बन्डे बेंगलुरु चारा गोदाम में बड़ी आगजनी

परिवहन विशेष न्यूज

बेंगलुरू: श्री कृष्णा गोशाला आश्रम होसुर बन्डे में सुबह 11.43 मिनट पर दो टीन शेड चारा गोदाम में रखा हुआ सुखा चारा में आगजनी हुयी, जिसमे रखा गौ माता के लिए चारा जलकर खाक हो गया, स्थानीय पुलिस फायर ब्रिगेड की तीन दमकल की गाड़ी ने बड़ी मुस्किल से 4 घंटे बाद आग पर काबू पाया, आग लगने की वजह का पुलिस तहकीकात कर रही है, स्थानीय सभी गौ सेवक, स्वयंसेवक, राष्टीय प्रजा प्रभुत्व के कुँवर राकेश देशरला सहित अन्य सभी सदस्यों ने गौ सेवा घर्म के काम के लिए तत्पर रहें। श्री कृष्णा गौशाला के स्वामी पुखराज महाराज ने बताया कि सुबह करीब 11.43 मिनट पर सीसी टीवी कैमरा बंद कर पीछे से आग लगाकर अंजाम दिया, आग केसे लगी इसकी पुलिस जांच कर रही है, अंदेशा है कुछ असमाजिक तत्वों ने अंजाम दिया है। सेवा के लिए पधारे सभी गौ भक्तों को साधुवाद दिया।

यदि भगत सिंह भारत के पहले प्रधानमंत्री होते तो देश का नक्शा कुछ और होता — भगवंत सिंह मान

धूरी, 17 मार्च (जगसीर लोगोंवाल)- पंजाब के मुख्यमंत्री सरदार भगवंत सिंह मान ने आज कहा कि यदि शहीद-ए-आज़म भगत सिंह देश के पहले प्रधानमंत्री होते, तो आज देश का नक्शा बिल्कुल अलग होता। उन्होंने सवाल करते हुए कहा कि आज़ादी के दशकों बाद भी देश पुराने सिस्टम के जाल में क्यों उलझा हुआ है, जबकि इसी सिस्टम से मुक्ति के लिए भगत सिंह और करतार सिंह सराभा जैसे क्रांतिकारियों ने अपनी जान न्योछावर की थी।

उन्होंने कहा कि यह दीवार पर लिखी बात पढ़ लेनी चाहिए कि वर्ष 2027 में भी आम आदमी पार्टी ही सत्ता में आएगी, क्योंकि चार वर्षों में सभी गारंटियां पूरी कर दी गई हैं और विरोधियों के पास जनता के सामने जाने के लिए कोई मुद्दा नहीं बचा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विरोधी पार्टियां बारी-बारी से पंजाब को लूटने के बाद अब फिर सत्ता में आने के लिए आपस में लड़ रही हैं। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार लोगों के अधिकारों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार के तीन कृषि कानूनों के खिलाफ आंदोलन के दौरान शहीद हुए 750 किसानों को पंजाब अभी तक नहीं भूला है।

आज नए बने सब-डिवीजनल अस्पताल को समर्पित करने के बाद सभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने कहा, "यह दीवार पर लिखी बात पढ़ लेनी चाहिए कि जनहित में लिए गए फैसलों के कारण 'आप' राज्य में दोबारा सरकार बनाएगी।" उन्होंने आगे कहा, "पंजाब के लोग 2027 में होने वाले विधानसभा चुनावों के बाद 'आप' की सरकार बनाने के लिए उत्साहित हैं। वर्ष 2022 में शहीद-ए-आज़म भगत सिंह के पैतृक गांव से सत्ता संभालने के बाद हमारी सरकार ने कई जनहितकारी फैसले लिए। हमने चार वर्षों में अपने सभी वादे पहले ही पूरे कर लिए हैं और आने वाले एक वर्ष में हम राज्य को नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगे।"

शासन व्यवस्था में नई पहल का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने कहा, "हमने चार साल में सभी वादे पूरे कर राजनीति में एक नई परंपरा शुरू की है, जबकि अन्य पार्टियां पांच साल में भी ऐसा करने में सक्षम नहीं हैं। पहले दिन से ही हमारी सरकार पिछली सरकारों के खराब सिस्टम को सुधार रही है और हम आम आदमी की भलाई के लिए साहसिक फैसले लेने से नहीं हिचकते।" उन्होंने आगे कहा, "अब कांग्रेस और बादल फिर से राज्य को लूटने का एक और मौका तलाश रहे हैं, जबकि राज्य पहले ही इनके शासनकाल में बहुत कुछ झेल चुका है।"

लोगों की भावनाओं का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा, "राज्य के समझदार लोग इन्हें कभी भी एक और मौका नहीं देंगे और चुनावों के बाद इन्हें राजनीतिक गुमनामी में भेज दिया जाएगा।" मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने आगे कहा, "जिन नेताओं ने नशे के कारोबार को संरक्षण दिया था, उन्हें सलाखों के पीछे भेजा गया है। इन नेताओं ने न केवल राज्य में नशे के व्यापार को बढ़ावा दिया, बल्कि अपनी सरकारी गाड़ियों में नशे बेचे और सप्लाई भी किए। पहले किसी ने भी इन प्रभावशाली नेताओं के खिलाफ कार्रवाई करने की हिम्मत नहीं की थी, लेकिन हमारी सरकार ने ऐसा किया और अब वे अपने कर्मों की सजा भुगत रहे हैं।"

इन नेताओं की आपसी मिलीभगत का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने कहा, "इन राजनीतिक पार्टियों के बीच एक नापाक गठजोड़ बना हुआ था क्योंकि वे राज्य का खजाना लूटने के लिए एक-दूसरे से हाथ मिला लेते थे। जब ये सत्ता में होते थे तो एक-दूसरे के अपराधों को छुपाने के लिए जानबूझकर आंखें मूंद लेते थे और बचाव कर लेते थे। हालांकि, 'आप' सरकार ने यह सुनिश्चित किया कि इस घिनौने अपराध के दोषियों को जेल भेजा जाए।"

विपक्षी नेताओं पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा, "आज भी वे एकजुट हैं। चरणजीत सिंह चन्नी, अमरिंदर सिंह राजा वड़िंग, सुखजिंदर सिंह रंधावा, कैप्टन अमरिंदर सिंह, सुखबीर सिंह बादल और अन्य नेता मुझे निशाना बनाने वाले समूह में शामिल हैं। पहले ये नेता मुझे एक मनोरंजन करने वाला बताकर मेरा मजाक उड़ाते थे, लेकिन अब डर के मारे दिन-रात मेरा नाम लेते हैं।"

इंडियन रेलवे ने कई स्पेशल ट्रेनों को रेगुलर एक्सप्रेस ट्रेनों में बदला है

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर: पैसेंजर की बढ़ती डिमांड को देखते हुए और पैसेंजर को लगातार और आसान ट्रैवल सर्विस देने के लिए, इंडियन रेलवे ने कुछ ट्रेनों को, जो पहले स्पेशल ट्रेनों के तौर पर चल रही थीं, रेगुलर ट्रेनों में बदलने की मंजूरी दे दी है। इससे पैसेंजर को ज़्यादा सुविधा, एक जैसा और भरोसेमंद रेलवे सर्विस का मज़ा मिलेगा।

ये ट्रेनें हैं:-

1. ट्रेन नंबर 02832/02831 भुवनेश्वर-धनबाद-भुवनेश्वर स्पेशल अब ट्रेन नंबर 18403/18404 भुवनेश्वर-धनबाद-भुवनेश्वर एक्सप्रेस के तौर पर चलेगी।

2. इसी तरह, ट्रेन नंबर 08439/08440 पुरी-पटना-पुरी स्पेशल अब ट्रेन नंबर 18405/18406 पुरी-पटना-पुरी एक्सप्रेस के तौर पर चलेगी।

3. ट्रेन नंबर 08583/08584 विशाखापत्तनम-तिरुपति-विशाखापत्तनम स्पेशल अब ट्रेन नंबर 18507/18508 विशाखापत्तनम-तिरुपति-विशाखापत्तनम एक्सप्रेस के तौर पर चलेगी।

4. ट्रेन नंबर 08581/08582 विशाखापत्तनम-SMVT बेंगलुरु-विशाखापत्तनम स्पेशल अब ट्रेन नंबर 18509/18510 विशाखापत्तनम-SMVT बेंगलुरु-विशाखापत्तनम एक्सप्रेस के तौर पर चलेगी।

5. ट्रेन नंबर 08547/08548 विशाखापत्तनम-तिरुपति-विशाखापत्तनम स्पेशल अब ट्रेन नंबर 1855/1856 विशाखापत्तनम-तिरुपति-विशाखापत्तनम एक्सप्रेस के तौर पर चलेगी। 6. ट्रेन नंबर 08579/08580 विशाखापत्तनम-चारलापली-विशाखापत्तनम स्पेशल अब ट्रेन नंबर 18527/18528 विशाखापत्तनम-चारलापली-विशाखापत्तनम एक्सप्रेस के तौर पर चलेगी।

जब से ये ट्रेनें स्पेशल ट्रेनों के तौर पर चलाई गई हैं, तब से यात्रियों का इन्हें बहुत सपोर्ट मिल रहा है। लगातार मांग और बेहतर रेल कनेक्टिविटी की ज़रूरत को देखते हुए, इन ट्रेनों को रेगुलर सर्विस में बदलने से यात्रियों को बहुत फ़ायदा होगा।

रेगुलर ट्रेन सर्विस भुवनेश्वर, पुरी, पटना, धनबाद, विशाखापत्तनम, तिरुपति, बेंगलुरु और हैदराबाद शहरों जैसी बड़ी जगहों को जोड़ती हैं और ओडिशा, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, बिहार, झारखंड और कर्नाटक राज्यों के बीच यात्रा को ज़्यादा आसान और सुविधाजनक बनाती हैं।

इन ट्रेनों की जगह, समय और सुविधाएं वैसी ही रहेंगी जैसी पहले स्पेशल सर्विस के तौर पर चल रही थीं। इन ट्रेनों के रेगुलर होने की तारीख अलग से बताई जाएगी। यह पहल इंडियन रेलवे की लगातार कोशिशों को दिखाती है, जिसमें यात्रियों की ज़रूरतों को पहले से पूरा करना, रीजनल कनेक्टिविटी को मज़बूत करना और सुरक्षित, आरामदायक और भरोसेमंद यात्रा पक्का करना शामिल है।

स्लाइट में "एआई फॉर टीचिंग एंड लर्निंग" विषय पर एक सप्ताह के फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का शुभारंभ

परिवहन विशेष न्यूज

लोंगोवाल, 17 मार्च (जगसीर सिंह) - संत लोंगोवाल इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (स्लाइट), लोंगोवाल, पंजाब के कंप्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग विभाग द्वारा "एआई फॉर टीचिंग एंड लर्निंग" विषय पर 16 से 20 मार्च तक आयोजित एक सप्ताह के ऑनलाइन फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का शुभारंभ किया गया। इस समागम के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता निदेशक स्लाइट प्रो. मणिकांत पासवान ने की उन्होंने संबोधन में उन्होंने आधुनिक शिक्षण पद्धतियों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के बढ़ते महत्व पर प्रकाश डाला तथा शिक्षकों को अकादमिक शिक्षण और अधिगम परिणामों को बेहतर बनाने के लिए एआई आधारित उपकरणों को अपनाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में श्री विजय कुमार रॉय, पूर्व उप महानिदेशक (एस आर आई), दूरसंचार विभाग, संचार मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली ने विशेष व्याख्यान दिया। उन्होंने उभरती डिजिटल तकनीकों, एआई आधारित नवाचार तथा शिक्षा और राष्ट्रीय तकनीकी विकास पर उनके प्रभावों के बारे में अपने महत्वपूर्ण विचार साझा किए।

इस अवसर पर उपस्थित विशिष्ट अतिथियों में प्रो. ए. एस. साहि, डीन (अकादमिक) तथा प्रो. दमनप्रीत सिंह, अध्यक्ष, कंप्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग विभाग, स्लाइट लोंगोवाल शामिल रहे। उन्होंने तेजी से विकसित हो रहे एआई परिदृश्य के साथ कदम मिलाने के लिए सतत व्यावसायिक विकास और अंतर्विषयक सीखने की आवश्यकता पर बल दिया।

इस एफडीपी का समन्वयन डॉ. जगदीप सिंह एवं डॉ. मनमिंदर सिंह द्वारा किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों को एआई उपकरणों और कार्यप्रणालियों का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना है, जिससे शिक्षण, अधिगम और शोध गतिविधियों को और अधिक प्रभावी बनाया जा सके।

उद्घाटन सत्र में 202 फैकल्टी सदस्यों, शोधार्थियों और शिक्षाविदों ने गूगल मीट के माध्यम से उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतिभागियों में देश के कई प्रतिष्ठित संस्थानों जैसे नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी दिल्ली, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी तिरुचिरापल्ली, यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन, जवाहरलाल नेहरू टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी, बनस्थली विद्यापीठ, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी तथा गुरु नानक देव इंजीनियरिंग कॉलेज, लुधियाना सहित अन्य संस्थानों के प्रतिनिधि शामिल हुए।

पांच दिवसीय इस एफडीपी के अंतर्गत एआई आधारित शिक्षण उपकरणों, जेनरेटिव एआई, इंटेलिजेंट ट्यूटरिंग सिस्टम्स तथा नवोन्मेषी शिक्षण पद्धतियों पर विशेषज्ञ व्याख्यान, हैंड्स-ऑन सत्र और संवाद आयोजित किए जाएंगे। इस कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों को व्यावहारिक एआई ज्ञान से सशक्त बनाना है, जिससे शिक्षण की प्रभावशीलता, अधिगम अनुभव तथा शोध परिणामों में सुधार हो सके।

विविधता में एकता का जीवंत उत्सव-गुड़ी पड़वा, चैत्र नवरात्र, चेट्रीचंड्र,ईद-उल-फितर और राम नवमी -दुर्लभ संगम-सर्वधर्म समभाव की वैश्विक मिसाल- समग्र विश्लेषण

गुड़ी पड़वा,चैत्र नवरात्र,चेट्रीचंड्र, ईद-उल-फितर और राम नवमी- एक ऐसा दुर्लभ संगम जो भारत की धर्मनिरपेक्षता को सशक्त व सर्वधर्म समभाव की अवधारणा को जीवंत करता है जब गुड़ी पड़वा,नवरात्र,चेट्रीचंड्र, ईद और राम नवमी जैसे पर्व एक साथ मनाए जाते हैं,तो यह संदेश पूरी दुनियाँ तक जाता है कि विविधता के बावजूद एकता संभव है -एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया- वैश्विक स्तरपर भारत, जिसे सदियों से आध्यात्मिकता, सांस्कृतिक विविधता और धार्मिक सह-अस्तित्व की भूमि के रूप में जाना जाता है, मार्च 2026 में एक अद्भुत और प्रेरणादायक दृश्य प्रस्तुत कर रहा है।यह वह समय है जब विभिन्न धर्मों और समुदायों के प्रमुख त्योहार लगभग एक ही सप्ताह के भीतर मनाए जा रहे हैं,एक ऐसा दुर्लभ संगम जो न केवल भारत की धर्मनिरपेक्षता को सशक्त बनाता है,बल्कि "सर्वधर्म समभाव" की उस अवधारणा को भी जीवंत करता है, जो भारतीय संविधान और सामाजिक ताने-बाने की आत्मा है।19 मार्च से 27 मार्च 2026 के बीच का यह समयखंड केवल कैलेंडर का संयोग नहीं है,बल्कि यह भारत की सामाजिक चेतना,सांस्कृतिक समृद्धि और पारस्परिक सम्मान का उत्सव है।इस अवधि में गुड़ी पड़वा,चैत्र नवरात्र,चेट्री चंड्र ,ईद-उल-फितर और राम नवमी जैसे प्रमुख पर्व एक के बाद एक मनाए जाएंगे।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि यह विविधता में एकता का ऐसा सशक्त उदाहरण है,जिसे दुनियाँ के सामने एक सांस्कृतिक मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

साथियों बात अगर हम सबसे पहले आने वाले त्योहार गुड़ी पड़वाः नववर्ष, विजय और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रतीक इसको समझने की करें तो19 मार्च 2026 को मनाया जाने वाला गुड़ी पड़वा महाराष्ट्र और आसपास के क्षेत्रों में अत्यंत महत्वपूर्ण पर्व है। यह दिन चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को आता है और हिंदू नववर्ष की शुरुआत का प्रतीक माना जाता है। इस दिन घरों के बाहर ध्गुड़ी" स्थापित की जाती है जो विजय, समृद्धि और शुभता का प्रतीक होती है।गुड़ी में नीम के पत्ते,आम की पत्तियां, पुष्पमाला और एक उल्टा रखा हुआ तांबे का कलश शामिल होता है।यह परंपरा न केवल धार्मिक आस्था से जुड़ी है, बल्कि यह ऐतिहासिक विजय विशेषकर राजा शालिवाहन की जीत का भी स्मरण कराती है। सुबह तेल स्नान, नए वस्त्र धारण करना और "पूरन पोली" जैसे पारंपरिक व्यंजनों का सेवन इस त्योहार को और भी खास बनाता है।यह पर्व केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं है, बल्कि यह वसंत ऋतु के आगमन,कृषि चक्र के पुनरारंभ और सामाजिकनवजीवन का प्रतीक भी है। गुड़ी पड़वा भारतीय समाज की उस सकारात्मक ऊर्जा को दर्शाता है, जिसमें हर नया वर्ष नई आशाओं और अवसरों के साथ शुरू होता है। चैत्र नवरात्रः शक्ति, साधना और आध्यात्मिक अनुशासन का पर्व है।

साथियों बात अगर हम उसी दिन दूसरे त्यौहार चैत्र नवरात्र को समझने की करें तो गुड़ी पड़वा के साथ ही 19 मार्च 2026 से चैत्र नवरात्र का शुभारंभ हो रहा है, जो 27 मार्च तक चलेगा। यह नौ दिनों का पर्व देवी दुर्गा के नौ रूपों की उपासना का समय है। इस दौरान श्रद्धालु उपवास रखते हैं, पूजा-अर्चना करते हैं और आत्मसंयम का पालन करते हैं।इस वर्ष विशेष बात यह है कि मां दुर्गा "पालकी" (डोली) पर सवार होकर आएंगी, जिसे शुभ संकेत माना जाता है। घट स्थापना का शुभ मुहूर्त 19 मार्च की सुबह 06:52 से 07:43 के बीच निर्धारित है। यह समय आध्यात्मिक ऊर्जा के जागरण और नए संकल्पों की शुरुआत का प्रतीक है।चैत्र नवरात्र केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह आत्मशुद्धि, अनुशासन और सकारात्मकता का संदेश भी देता है। यह पर्व हमें सिखाता है कि जीवन में संतुलन और आत्मनियंत्रण कितना महत्वपूर्ण है।

साथियों बात अगर हम चेट्रीचंद्र सिंधी समुदाय की सांस्कृतिक पहचान और आस्था का उत्सव इसको समझने की करें तो,20 मार्च 2026 को मनाया जाने वाला चेटी चंद सिंधी समुदाय का प्रमुख पर्व है, जो उनके नववर्ष का आरंभ भी है। यह दिन भगवान झूलेलाल को समर्पित होता है, जिन्हें जल देवता के रूप में पूजा जाता है।"चेटी चंद" का अर्थ है "चैत्र का चंद्रमा",जो नईशुरुआत और आशा का प्रतीक है। इस दिन सिंधी समुदाय झांकियां निकालता है, भजन-कीर्तन करता है और सामूहिक रूप से उत्सव मनाता है।यह पर्व केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं है, बल्कि यह सिंधी संस्कृति, परंपराओं और सामाजिक एकता का भी प्रतीक है। यह दर्शाता है कि भारत में हर समुदाय अपनी विशिष्ट पहचान को बनाए रखते हुए राष्ट्रीय एकता में योगदान देता है।सिंधी समाज पर हो रहे अत्याचार की पुकार सुन जल देवता से आकाशवाणी के 2 दिन बाद चैत्र माह की शुक्ल पक्ष में नासरपुर (पाकिस्तान की सिन्धु घाटी) के देवकी व ताराचंद के यहाँ एक बेटे ने जन्म लिया, जिसका नाम उदयचंद रखा गया। हिंदी में उदय का मतलब उगना होता है। भविष्य में ये छोटा बच्चा हिन्दू सिन्धी समाज का रक्षक बना, जिसने मिरक शाह जैसे शैतान का अंत किया अपने नाम को चरितार्थ करते हुए उदयचंद जी ने सिंध के हिंदुओ के जीवन के अँधेरे को खत्म कर उजयाला फैला दिया।

साथियों बात अगर हम चेटीचंड के दैनिक मुस्लिम भाइयों के प्रिय त्योहार ईद-उल-फितरः आभार करुणा और भाईचारे का संदेश को समझने की करें तो मार्च 2026 में ईद-उल-फितर 20 या 21 मार्च को मनाई जाएगी,जो चांद के दीदार पर निर्भर करती है। यह पर्व रमजान के पवित्र महीने के समापन का प्रतीक है।ईद का दिन अल्लाह के प्रति आभार व्यक्त करने, जरूरतमंदों की मदद करने और सामाजिक भाईचारे को मजबूत करने का अवसर होता है। इस दिन विशेष नमाज अदा की जाती है, "फितरा" (दान) दिया जाता है और लोग एक-दूसरे को गले लगाकर "ईद मुबारक" कहते हैं। सेवइयां और अन्य मिठाइयों का वितरण इस त्योहार की खास पहचान है। यह पर्व हमें सिखाता है कि खुशी तभी पूर्ण होती है जब उसे दूसरों के साथ साझा किया जाए। ईद-उल-फितर भारत की गंगा-जमुनी तहजीब का प्रतीक है, जहां विभिन्न धर्मों के लोग एक-दूसरे के त्योहारों में भाग लेते हैं और आपसी प्रेम को बढ़ाते हैं।

साथियों बात अगर हम राम नवमीः आदर्श जीवन मूल्यों का उत्सव इसको समझने की करें तो 27 मार्च 2026 को मनाई जाने वाली राम नवमी भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव के रूप में पूरे भारत में श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाई जाती है। विशेष रूप से अयोध्या में यह उत्सव अत्यंत भव्य होता है,जहां देश- विदेश से श्रद्धालु पहुंचते हैं।इस दिन मंदिरों में पूजा-अर्चना, शोभायात्राएं, रथ यात्राएं और भव्य झांकियां आयोजित की जाती हैं।भगवान राम को "मर्यादा पुरुषोत्तम" के रूप में पूजा जाता है, जो सत्य, धर्म और न्याय के प्रतीक हैं।राम नवमी हमें यह संदेश देती है कि आदर्श जीवन जीने के लिए नैतिकता, संयम और कर्तव्य परायणता कितनी आवश्यक है। यह पर्व भारतीय संस्कृति के मूल्यों को सटीक रूप से सुदृढ़ करता है।

साथियों बात अगर हम सर्वधर्म समभावः भारतीय समाज की आत्मा को समझने की करें तो मार्च 2026 का यह सप्ताह भारत के लिए केवल त्योहारों का समय नहीं है, बल्कि यह उसकी आत्मा सर्वधर्म समभाव का उत्सव है। यह वह सिद्धांत है, जो कहता है कि सभी धर्म समान हैं और उनका सम्मान किया जाना चाहिए।भारत का संविधान भी धर्मनिरपेक्षता की इसी भावना को अपनाता है, जहां राज्य किसी एक धर्म को प्राथमिकता नहीं देता,बल्कि सभी को समान अवसर और सम्मान प्रदान करता है।जब गुड़ी पड़वा, नवरात्र, चेटी चंद, ईद और राम नवमी जैसे पर्व एक साथ मनाए जाते हैं, तो यह संदेश पूरी दुनिया तक जाता है कि विविधता के बावजूद एकता संभव है।

धार्मिक परंपराओं का निर्वाह के साथ राजमहल मे होगा चैत्र पर्व :राजा-

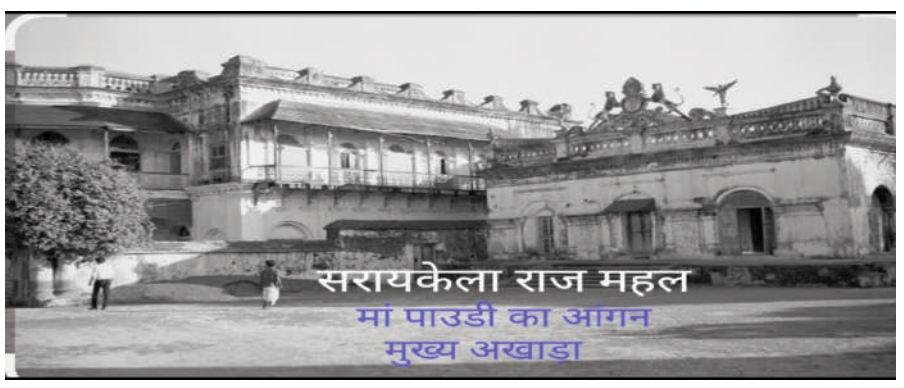

ओड़िया संस्कृति तथा विश्व प्रसिद्ध सरायकेला छऊ को संरक्षण

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची , उत्कलीय एक गढदेवी (रियासत की देवी) मां पाउडी का आंगन मुख्य अखाड़ा उन सैन्य छावनियों के युद्ध अखाड़ों का जहां उत्कल के परंपरागत लड़ाकु सैनिक ढाल तलवार लेकर युद्ध भूमि में जाते थे विभिन्न रियासतों में । जिसका सांकेतिक नव वर्ष उत्सव चैत्र पर्व कहलाता । यह विशुद्ध परंपरा है उत्कल /ओडिशा जिसकी कला उन्नत उस प्रदेश के नववर्ष आगाज का-तब होता है छऊ नाच। लगभग 130वर्ष पहले इसी राजमहल पैदा हुए एक शख्स जिनका नाम राजकुमार कुंवर विजय प्रताप सिंह देव रहा जिन्होंने छावनी से आया उत्कलीय खंडायतों उनके पाइकों का उस समर कला को कलात्मक रूप देकर विश्व प्रसिद्ध बना दिया । आपने 1937-38 में युरोप में लेजाकर उस गोरी सम्राज्ञी के राजधानी में राजकुमारों तथा अपने राज़ के नागरिकों के इस नृत्य पर नचवाया तो दुनियां देख स्थम्भिभूत रही , कारण वे अंग्रेज थे और यह मार्शल आर्ट आधारित अर्ध शास्त्रीय पारंपरिक नृत्य था । सरायकेला जहां कभी मुगल , मराठा अंग्रेज नहीं पहुंच पाये जिस जमीन पर मुनियन जैक नही फहरा आजाद मुल्क में उसकी इतिहास को कब्र में दफ़न किया गया । एन वक्त पर सरायकेला के राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव ने इस वर्ष छऊ का उस मुख्य अखाड़ा (राजमहल) में प्रदर्शन को जारी रखने का वकालत करते हुए इससे जुड़े पूजा अर्चना (घट और पाट) को बनाए रखने जा रहे हैं । जहां इस उत्कलीय परंपरा को तहस नहस कर रहे बिहार झारखंड सरकार के क्रियाकलाप पर उन्होंने गत दिनों एस डी एम सरायकेला के बैठक के बाद तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त की थी ।

सरायकेला खरसावां एवं झारखंड , ओडिशा समेत देश विदेश के कलाप्रेमी व धार्मिक आस्था से जड़ी जनता को अपने संबोधन में राजा सरायकेला प्रताप आदित्य सिंहदेव ने कहा कि इस वर्ष का आयोजन पूर्ववत होगा । शुभघट से लेकर पाट तक तमाम घट पाट का आयोजन किया जाएगा , जो मुख्य आधार है इस चैत्र पर्व का । तीस पैंतीस वर्ष पूर्व तक एक जमाना ऐसा भी था जब यात्रा घट में दस हजार तक भीड़ होती थी, गांव गांव से फरियादी महादेव पार्वती को समर्पित घट में अपनी मन्नत मांगते देखे जाते थे आधी रात । केवल देश ही नहीं दर्जनाधिक विदेशी मेहमान भी शामिल होते थे उसमें । जबसे इसमें गैर जानकार लोग पद पर आसीन हुए और भ्रष्टाचार बढ़ी तब से स्थिती बिगड़ी । जिसका मूल कारण ओडिया भाषा संस्कृति को तहस नहस करना था दुसरे राज्य में लाकर । राजा सरायकेला के अनुसार कमोवेश आज भी वही जारी है । जिसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि सरकारी आयोजन या पूजा कुछ भी हो पर आज भी लोगों का संबंध, पैलेस महत्त्व सबसे आगे रहता ।

नतीजा आज यहां तक आ चुकी है कि अन्य नाम का कुछ छऊ नृत्य आगे बढ़ चुका है , कारण उसी समय इसी जगह पर अन्य नृत्य आयोजन करना सरकारी षड्यंत्रकारी कदम रहा है । जहां सरायकेला इतिहास तहस नहस हो रहा है । राजा सरायकेला प्रताप आदित्य सिंहदेव ने इस वर्ष आयोजन में सभी जनता , जानकार , पत्रकारों को आमंत्रित कर एक मजबूत संदेश दिया है । जहां प्रशासन ने जानकारों, पत्रकारों को गत दिनों आयोजित बैठक से दुर रखा है ।

तपता मार्च, सूखता पानी: क्या हम असली समस्या से भाग रहे हैं?

· प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

सुबह की हवा में अब वसंत की ठंडक नहीं, गर्मी की तीखी आहट है, और यही हाल कई शहरों में फैल चुका है। मार्च 2026 में दिल्ली में पारा 35.7°C तक पहुंचा – पहले सप्ताह का 50 साल का सबसे गर्म मार्च – जबकि गुजरात, राजस्थान, विदर्भ और मध्य प्रदेश के कई इलाकों में तापमान 38-42°C तक पहुंच गया। लखनऊ, जयपुर, भोपाल, इंदौर जैसे शहर भी इस असामान्य गर्मी की चपेट में हैं। यह क्षणिक बदलाव नहीं, बल्कि बदलती जलवायु की स्पष्ट तस्वीर है जो पूरे देश की दिनचर्या में समा रही है। जो मार्च कभी हल्की धूप और सुकून का महीना था, अब तपिश और सूखेपन का अनुभव बन गया है। यह बदलाव अचानक नहीं, बल्कि लंबे समय की अनदेखी का नतीजा है, जिसे हम 'नया सामान्य' मानने लगे हैं।

मार्च के शुरुआती दिनों में ही बढ़ती गर्मी ने मौसम की पुरानी धारणाएं तोड़ दी हैं। जो तपिश कभी अप्रैल–मई तक सीमित थी, वह अब पहले ही सप्ताह में रिकॉर्ड बना रही है। यह सिर्फ समय का बदलाव नहीं, बल्कि बिगड़ते पर्यावरणीय संतुलन का संकेत है, जिसे लंबे समय से नजरअंदाज किया गया। चिंताजनक यह है कि पहाड़ी क्षेत्र भी अब इससे अछूते नहीं, साफ है कि जलवायु परिवर्तन सीमाएं पार कर चुका है। यह फैलता संकट हर क्षेत्र को प्रभावित कर रहा है और हमें सोचने पर मजबूर कर रहा है कि क्या हमने प्रकृति से अपना संतुलन खो दिया है।

इस बढ़ती गर्मी के साथ जल संकट भी तेजी से गहराता जा रहा है। बड़े जलाशयों का घटता स्तर किसी सामान्य मौसमी उतार-चढ़ाव का नहीं, बल्कि गंभीर असंतुलन का संकेत है। मार्च में ही जब पानी आधा रह जाए, तो आने वाले महीनों का संकट साफ दिखाई देता है। इसका असर सिर्फ शहरों तक सीमित नहीं, गांवों में किसान फसलों को बचाने के लिए जूझ रहे हैं। नदियां कमजोर पड़ रही हैं, भूजल नीचे जा रहा है और पानी की हर बूंद की अहमियत बढ़ती जा रही है। यह हालात स्पष्ट करते हैं कि जलवायु परिवर्तन केवल गर्मी नहीं बढ़ा रहा, बल्कि हमारे जल संसाधनों को भी तेजी से खत्म कर रहा है।

तापमान और प्रदूषण का साथ इस संकट को और खतरनाक बना रहा है—एक ऐसा दोहरा प्रहार जो शरीर और पर्यावरण दोनों को प्रभावित कर रहा है। गर्मी बढ़ते ही हवा में मौजूद जहरीले कण और

सक्रिय हो जाते हैं, जिससे सांस लेना कठिन हो जाता है। दिल्ली और आसपास की खराब होती हवा यह दिखा रही है कि समस्या सिर्फ गर्मी नहीं, बल्कि उसी हवा की है जिस पर जीवन निर्भर है। इसका सबसे ज्यादा असर बच्चों, बुजुर्गों और बीमारों पर पड़ रहा है, और अस्पतालों में बढ़ती भीड़ संकेत है कि यह अब पर्यावरण नहीं, गंभीर स्वास्थ्य संकट बन चुका है।

ऐसे हालात में वर्ल्ड बैंक का हरियाणा क्लीन एयर प्रोजेक्ट (300 डॉलर मिलियन) राहत की उम्मीद जगाता है। साफ हवा के लिए मॉनिटरिंग नेटवर्क का विस्तार, इलेक्ट्रिक वाहन, कृषि और उद्योग सुधार सकारात्मक कदम हैं। लेकिन असली सवाल यही है कि क्या ये पर्याप्त हैं, या हम सिर्फ ऊपर-ऊपर से समस्या को संभाल रहे हैं? मॉनिटरिंग, इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा और कृषि सुधार जरूरी हैं, पर जब तक ये व्यापक और दीर्घकालिक नीति से नहीं जुड़ते, तब तक इनका असर सीमित ही रहेगा।

वास्तविक चुनौती उन जड़ों पर प्रहार करने की है जहां से यह संकट पैदा हो रहा है। तेज औद्योगिकीकरण, जीवाश्म ईंधनों पर बढ़ती निर्भरता, जंगलों की कटाई और अव्यवस्थित शहरी विस्तार ने प्राकृतिक संतुलन को गहराई से बिगाड़ दिया है। फिर भी हम प्रदूषण को मौसमी मानकर टाल देते हैं और गर्मी को अस्थायी असुविधा समझकर नजरअंदाज कर देते हैं। लेकिन मार्च 2026 ने साफ कर दिया है कि यह सोच अब खतरे से खाली नहीं। जब असामान्यता ही सामान्य लगने लगे, तो इसका मतलब है कि हमने समस्या को स्वीकार तो कर लिया, लेकिन उससे लड़ने की तैयारी अब भी अधूरी है।

इस बदलते दौर का सबसे भारी असर आम लोगों की जिंदगी पर दिख रहा है, जहां रोजमर्रा अब सहज नहीं, संघर्ष बन गई है। एक साधारण परिवार के लिए पानी बचाना, बिजली संभालना और स्वास्थ्य सुरक्षित रखना लगातार चुनौती है। बच्चों का बाहर खेलना घट गया है, बुजुर्गों के लिए बाहर निकलना जोखिम भरा है और कामकाजी लोगों के लिए काम की गति बनाए रखना कठिन हो रहा है। यह सिर्फ पर्यावरणीय संकट नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक असमानता को भी गहरा कर रहा है—जहां साधन वाले खुद को बचा लेते हैं, वहीं कमजोर वर्ग पर दबाव लगातार बढ़ता जा रहा है।

सबसे अहम सवाल यही है कि क्या हम सब कुछ देखते हुए भी अनदेखा कर रहे हैं? लगातार चेतावनियां सामने हैं—बढ़ता तापमान, वैज्ञानिक रिपोर्टें, मौसम के संकेत—सब एक ही खतरे की ओर इशारा कर रहे हैं। इसके बावजूद हमारी प्रतिक्रिया अक्सर सतही ही रहती है। हम तात्कालिक राहत के उपाय अपनाते हैं, जैसे ठंडक के लिए एसी या पानी का अस्थायी इंतजाम, लेकिन स्थायी समाधान की दिशा में ठोस कदम उठाने से बचते हैं। यह सोच हमें कुछ समय जरूर दे सकती है, पर समस्या का हल नहीं।

अब जरूरत है कि इस संकट को पूरी गंभीरता से स्वीकार कर ठोस बदलाव की दिशा में आगे बढ़ा जाए। स्वच्छ ऊर्जा को अपनाना, जल संरक्षण को प्राथमिकता देना, हरित क्षेत्र बढ़ाना और नीतियों में सख्ती लाना अब विकल्प नहीं, अनिवार्यता बन चुके हैं। साथ ही हर व्यक्ति की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि छोटे प्रयास मिलकर बड़ा बदलाव ला सकते हैं। अगर अब भी हम नहीं चेते, तो आने वाले समय में यह संकट और गहरा जाएगा। मार्च 2026 की यह तपिश केवल एक मौसम नहीं, बल्कि भविष्य का संकेत है—अब तय हमें करना है कि हम इसे चेतावनी समझते हैं या अपनी नियति।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023